PRGI No. UPHIN/25/A1697

गरवी गुजरात

गरवी गुजरात

PUBLISHED HINDI DAILY FROM LUCKNOW

वर्ष : 02
अंक : 068
दि. 07.07.2026,
मंगलवार
पाना : 04
किंमत : 00.50 पैसा

इंडोनेशिया: जकार्ता में भारतीय समुदाय ने पीएम मोदी का भव्य स्वागत किया

(जीएनएस)।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तीन देशों के दौरे के पहले चरण में सोमवार को जकार्ता पहुंचे, जहां इंडोनेशिया में रहने वाले भारतीय समुदाय के लोगों ने उनका जोरदार स्वागत किया। पीएम मोदी राष्ट्रपति प्राबोवो सुबियांतो के निमंत्रण पर 6 से 8 जुलाई तक इंडोनेशिया के दौरे पर हैं। राष्ट्रपति खुद हवाई अड्डे पर दूसरे नेताओं के साथ प्रधानमंत्री का स्वागत करने के लिए मौजूद रहे।

भारतीय समुदाय ने 'भारत माता की जय' और 'मोदी, मोदी' के नारों के साथ पीएम मोदी का स्वागत किया। एयरपोर्ट पहुंचने पर उन्होंने एक सांस्कृतिक कार्यक्रम देखा।

भारतीय प्रधानमंत्री के जकार्ता पहुंचने से पहले, वहां रहने वाले भारतीयों ने उनकी यात्रा पर खुशी जाहिर की। एक स्थानीय व्यक्ति ने कहा, 'यह पहली बार है जब मैं पीएम मोदी को इतने करीब से देखूंगा। मैं बहुत उत्साहित हूं। 'एक और व्यक्ति ने कहा, 'हम स्नेह और प्यार के साथ आपका स्वागत करते हैं।'

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि जकार्ता एयरपोर्ट पर राष्ट्रपति प्राबोवो सुबियांतो द्वारा उनके स्वागत से वे बहुत प्रभावित हुए और कहा कि वे विभिन्न क्षेत्रों में इस साझेदारी को और गति देने के उद्देश्य से बातचीत करेंगे।

प्रधानमंत्री मोदी 6 से 11 जुलाई 2026 तक तीन देशों (इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड) की राजकीय यात्रा पर हैं।

पीएम मोदी ने अपने प्रस्थान वक्तव्य में कहा कि वर्ष 2018 में मेरी पहली इंडोनेशिया यात्रा के दौरान भारत और इंडोनेशिया ने द्विपक्षीय संबंधों को व्यापक रणनीतिक साझेदारी का दर्जा दिया था। उसके बाद यह मेरी पहली द्विपक्षीय यात्रा होगी। यह यात्रा राष्ट्रपति प्रबोवो की भारत की राजकीय यात्रा के बाद हो रही है, जो 26 जनवरी, 2025 को हमारे गणतंत्र दिवस समारोह में मुख्य अतिथि थे। भारत और इंडोनेशिया के बीच मजबूत सभ्यतागत और जन-संबंध हैं और मेरी यह यात्रा हमारी बहुआयामी साझेदारी के सभी पहलुओं को और अधिक सुदृढ़ करेगी। इस यात्रा के दौरान, मैं इंडोनेशिया में रहने वाले भारतीय प्रवासियों से भी बातचीत करूंगा और राष्ट्रपति प्रबोवो के साथ योग्याकार्ता स्थित प्रम्‍ बनन मंदिर परिसर का दौरा करूंगा, जो हमारे घनिष्ठ सांस्कृतिक संबंधों का एक और उल्लेखनीय प्रमाण है।

उन्होंने यह भी कहा कि पूर्वी और दक्षिणी हिंद महासागर में स्थित क्रमशः इंडोनेशिया और ऑस्ट्रेलिया की मेरी यात्रा, जिसके बाद न्यूजीलैंड की यात्रा का कार्यक्रम है, भारत की एक्ट ईस्ट पॉलिसी और महासागर विजन के साथ-साथ एक स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र के प्रति हमारे दृष्टिकोण को और अधिक सशक्त बनाएगी।

मोदी इंडोनेशिया पहुंचे, फाइटर जेट्स ने एस्कॉर्ट किया:देश की 85% आबादी मुस्लिम, फिर भी गरुड़ एयरलाइन, नोट पर गणेश की तस्वीर छपी

(जीएनएस)।

जकार्ता, पीएम मोदी के विमान के इंडोनेशिया के एयरस्पेस में एंट्री करते ही वहां की वायुसेना के लड़ाकू विमानों ने उसे एस्कॉर्ट किया।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सोमवार को इंडोनेशिया पहुंचे। सीमा पर पहुंचते ही मेजबान देश के फाइटर जेट्स ने उनके विमान को एस्कॉर्ट किया। प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी का यहां तीसरा दौरा है।

एयरपोर्ट पर राष्ट्रपति प्रबोवो सुबियांतो ने उनका स्वागत किया। दोनों नेताओं के बीच होने वाली द्विपक्षीय बैठक में करीब ₹2,500 करोड़ की ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल डील पर मुहर लगने की संभावना है।

पीएम मोदी इंडोनेशिया के सबसे बड़े हिंदू मंदिर प्रम्बानन भी जाएंगे। 9वीं शताब्दी में बना यह मंदिर भगवान शिव, विष्णु और ब्रह्मा को समर्पित है और यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल है।

इंडोनेशिया दुनिया की सबसे बड़ी मुस्लिम आबादी वाला देश है, लेकिन उसकी सांस्कृतिक विरासत पर हिंदू-बौद्ध सभ्यता की गहरी छाप दिखाई देती है। यहां रामलीला होती है, गरुड़ एयरलाइन है और नोट पर भगवान गणेश की तस्वीर भी छप चुकी है। आखिर यहां भारतीय संस्कृति कैसे पहुंची? पढ़िए खबर के आखिर में भास्कर नॉलेज।

इंडोनेशिया का साबंग पोर्ट अंडमान और निकोबार द्वीप समूह के बेहद करीब है। भारत और इंडोनेशिया ने 2018 में प्रधानमंत्री मोदी की जकार्ता यात्रा के दौरान साबंग पोर्ट और आसपास समुद्री सहयोग बढ़ाने पर सहमति जताई थी। इसके तहत पोर्ट के विकास, समुद्री संपर्क, लॉजिस्टिक सहयोग और समुद्री सुरक्षा को मजबूत करने पर जोर दिया गया।

भारत और इंडोनेशिया के बीच करीब ₹2,500 करोड़ की ब्रह्मोस सुपरसोनिक क्रूज मिसाइल सिस्टम की संभावित डील इस यात्रा का सबसे अहम एजेंडा मानी जा रही है। अगर समझौते पर मुहर लगती है तो फिलीपींस के बाद इंडोनेशिया ब्रह्मोस मिसाइल खरीदने वाला दूसरा विदेशी ग्राहक बन सकता है।

ब्रह्मोस मिसाइल का विकास भारत के ऊ‍ऋऌ और रूस की 'एनपीओ मशिनोस्ट्रोयेनिया' के संयुक्त उपक्रम ब्रह्मोस एयरोस्पेस ने किया है। यह दुनिया की सबसे तेज ऑपरेशनल सुपरसोनिक क्रूज मिसाइलों में गिनी जाती है।

भारत और इंडोनेशिया के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों की बात करें, तो ये करीब 2,000 साल पुराने माने जाते हैं। प्राचीन काल से भारतीय व्यापारियों, हिंदू और बौद्ध संस्कृति का इंडोनेशिया पर गहरा प्रभाव रहा है।

अमरनाथ यात्रा के बीच सेना को बड़ी कामयाबी, भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद

अमरनाथ यात्रा के बीच भारतीय सेना को जम्मू-कश्मीर में बड़ी कामयाबी मिली है। सेना की चिनार कोर ने सोमवार (6 जुलाई) को खुफिया जानकारी के आधार पर कुपवाड़ा जिले के केरन सेक्टर में सर्च ऑपरेशन चलाया। इस दौरान सुरक्षा बलों ने आतंकियों के एक ठिकाने का भंडाफोड़ करते हुए पांच अङ सीरीज राइफल, नौ अङ मैगजीन, एक हैंड ग्रेनेड, भारी मात्रा में गोला-बारूद और अन्य युद्ध जैसी सामग्री बरामद की।

सेना का मानना है कि यह कार्रवाई सीमा पार से आतंकियों की घुसपैठ और संभावित आतंकी साजिश को नाकाम करने की दिशा में बड़ी सफलता है, खासकर ऐसे समय जब अमरनाथ यात्रा जारी है।

प्रधानमंत्री मोदी समेत कई नेताओं ने दलाई लामा को 91वें जन्मदिन पर दी शुभकामनाएं

(जीएनएस)।

बौद्ध धर्मगुरु 14वें दलाई लामा के 91वें जन्मदिन पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला समेत कई केंद्रीय मंत्रियों और नेताओं ने उन्हें शुभकामनाएं दीं। नेताओं ने उनके लंबे एवं स्वस्थ जीवन की कामना करते हुए शांति, करुणा और मानवता के प्रति उनके योगदान की सराहना की।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर शुभकामना संदेश साझा करते हुए कहा कि दलाई लामा का शांति और सद्भाव का संदेश पूरी दुनिया के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने कहा कि उनकी नैतिक और आध्यात्मिक शक्ति तथा वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता प्रशंसनीय है। प्रधानमंत्री ने उनके दीघार्यु और स्वस्थ जीवन की कामना भी की।

लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला ने

कहा कि करुणा, शांति और मानवीय गरिमा के प्रति दलाई लामा का आजीवन समर्पण दुनिया भर के लाखों लोगों को प्रेरित करता है। उन्होंने उनके उत्तम स्वास्थ्य और खुशहाल जीवन की कामना की। वहीं, केंद्रीय संसदीय कार्य एवं अल्पसंख्यक कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि 14वें दलाई लामा के मूल्य और आदर्श पूरी मानवता को प्रेम, शांति और करुणा का मार्ग दिखाते हैं। उन्होंने उनके लंबे और स्वस्थ जीवन के लिए प्रार्थना की।

केंद्रीय संचार एवं पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कहा कि करुणा, सद्भाव और शांति के लिए दलाई लामा का आजीवन समर्पण मानवता के लिए मार्गदर्शक बना हुआ है। उन्होंने उनके अच्छे स्वास्थ्य और लंबी उम्र की कामना की। केंद्रीय जल शक्ति मंत्री सीआर पाटिल ने कहा कि करुणा, अहिंसा, शांति और मानवीय मूल्यों के प्रति दलाई लामा का समर्पण विश्वभर के लोगों के लिए प्रेरणास्रोत है।

'10 मिनट में पोस्ट हटाओ', BJP MP को अखिलेश ने दी अल्टीमेटम, निशिकांत दुबे बोले- राम भक्त पर गोली किसने चलवाई?

(जीएनएस)।

अयोध्या के राम मंदिर में चढ़ावा और दान की कथित हेराफेरी का मामला अब एक बेहद संवेदनशील राजनीतिक रंग ले चुका है। इस पूरे विवाद की आंच अब सीधे समाजवादी पार्टी (सपा) के मुखिया अखिलेश यादव और भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) के तेजतर्रार सांसद निशिकांत दुबे के बीच एक बड़े 'ट्विटर वॉर' (सोशल मीडिया जंग) में बदल गई है।

बात इतनी बढ़ गई है कि अखिलेश यादव ने बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे को सरेआम सिर्फ 10 मिनट के भीतर अपना पोस्ट हटाने का अल्टीमेटम दे दिया और ऐसा न करने पर सीधे नामजद एफआईआर (ऋक्रफ) दर्ज कराने की खुली चेतावनी दे डाली।

दूसरी तरफ बीजेपी सांसद निशिकांत दुबे भी पीछे हटने को तैयार नहीं हैं और उन्होंने अदालत जाने की बात कहकर इस जंग को और तेज कर दिया है। आइए आपको समझाते हैं कि आखिर यह पूरा विवाद क्या है और 'टिन्नू-टीपू' के इस ताने के पीछे की असली इनसाइड स्टोरी क्या है।

आखिर किस बात पर भड़के अखिलेश यादव?

इस पूरे सियासी घमासान की शुरूआत झारखंड के गोड्‍डा से भाजपा सांसद निशिकांत दुबे के एक सोशल मीडिया पोस्ट से हुई।

अयोध्या चढ़ावा चोरी मामले के मुख्य आरोपियों में से एक रामशंकर यादव उर्फ टिन्नू यादव के साथ अखिलेश यादव की एक तस्वीर साझा करते हुए निशिकांत दुबे ने तंज कसा और लिखा, 'टिन्नू टीपू से ही तो बात कर रहा था?' (बता दें कि 'टीपू' अखिलेश यादव का घरेलू नाम है)।

इस पोस्ट को देखते ही सपा प्रमुख का गुस्सा सातवें आसमान पर पहुंच गया। सोमवार (06 जुलाई) शाम करीब 4:17 बजे अखिलेश यादव ने बेहद आक्रामक अंदाज में जवाबी पोस्ट किया। उन्होंने लिखा कि मयार्दा और संसदीय परंपराओं का लिहाज करते हुए वह बीजेपी सांसद को अपनी यह 'झूठी पोस्ट' हटाने के लिए सिर्फ 10 मिनट का समय दे रहे हैं।

अगर तय समय में यह पोस्ट डिलीट नहीं हुई, तो वह तुरंत नामजद रिपोर्ट दर्ज कराएंगे। अखिलेश ने उन सभी लोगों को भी चेतावनी दी जिन्होंने इस पोस्ट को शेयर किया है कि वे इसे हटाकर सार्वजनिक रूप से माफी मांगें, वरना कानूनी कार्रवाई झेलने के लिए तैयार रहें।

बीजेपी सांसद का पलटवार: 'इतना गुस्सा क्यों, बस सवाल ही तो पूछा है'

अखिलेश यादव की इस कानूनी धमकी पर निशिकांत दुबे ने भी तुरंत और बेहद तीखा पलटवार किया। उन्होंने बिना किसी डर के एक्स (ट्विटर) पर लिखा, 'जल्दी करिए, इतना परेशान क्यों हैं? प्रश्न ही तो पूछा है? 1990 में राम भक्त पर गोली किसने चलवाई? मैं अदालत जाऊंगा।'

निशिकांत दुबे ने अपने इस जवाब से न सिर्फ अखिलेश के अल्टीमेटम को ठेंगा दिखा दिया, बल्कि पुराना चुनावी और राजनीतिक मुद्दा उछालते हुए मुलायम सिंह यादव के दौर में कारसेवकों पर हुई फायरिंग की घटना की याद दिलाकर मामले को पूरी तरह ध्रुवीकरण की तरफ मोड़ दिया।

अब पढ़िए अखिलेश यादव का पूरा पोस्ट

अखिलेश यादव ने अपने एक्स पोस्ट (ट्विटर का बदला हुआ नाम) में लिखा,

"सार्वजनिक-सार्वभौमिक वैधानिक चेतावनी! जितना सत्ता पक्ष के सांसद का विशेषाधिकार होता है, उतना ही विशेषाधिकार विपक्ष के सांसद का भी होता है। पुरुषोत्तम प्रभु राम जी की मयार्दा एवं सामाजिक शालीनता, सभ्यता और संसदीय परंपरा का मान रखते हुए हम भाजपा के सांसद को 10 मिनट का समय देते हैं कि वो इस झूठे ट्वीट-पोस्ट को डिलीट कर दें अन्यथा उनके खिलाफ तत्काल नामजद रिपोर्ट दर्ज कराई जाएगी, साथ ही ये चेतावनी उन सबको भी है जिन्होंने ये झूठ फैलाया है, वो भी सोशल मीडिया पर तुरंत डिलीट करें

'ईडी-सीबीआई नहीं, एसआईटी क्यों?': 'राम मंदिर दान' पर अखिलेश का बड़ा दावा, बोले- दिल्ली-लखनऊ की लड़ाई में दब गई जांच

(जीएनएस)।

लखनऊ, अखिलेश ने तंज कसते हुए कहा कि पैसे को देखकर लोग पूरी तरह से अपना आपा खो बैठे हैं। हमारा मानना है कि जो कोई भी भगवान राम के जीवन का अध्ययन करता है, वह 'लक्ष्मण रेखा' (मयार्दा की रेखा) के बारे में जानता है फिर भी यहां हर किसी ने 'मयार्दा' की सीमाओं को लांघ दिया है।

समाजवादी पार्टी (सपा) के मुखिया अखिलेश यादव ने सोमवार को भारतीय जनता पार्टी (बीजेपी) पर परोक्ष रूप से तीखा हमला बोला है। उन्होंने आरोप लगाया कि राम मंदिर के कथित दान चोरी मामले की जांच को सीबीआई जैसी केंद्रीय एजेंसियों के बजाय एक विशेष जांच दल (एसआईआटी) को सौंप दिया गया, क्योंकि पार्टी के भीतर 'आंतरिक सत्ता संघर्ष' चल रहा है।

अखिलेश यादव ने बीजेपी का नाम लिए बिना संकेत दिया कि उसके पास सत्ता के दो केंद्र हैं- एक लखनऊ में और दूसरा दिल्ली में। उन्होंने आरोप लगाया कि जांच को संभालने का तरीका इसी आंतरिक प्रतिद्वंद्विता से प्रभावित था।

अखिलेश ने कहा कि चढ़ावा, दान और योगदान चोरों के एक गिरोह के हाथ लग गया है। वे जनता के गुस्से का सामना करने की हिम्मत नहीं जुटा पा रहे हैं। जैसा कि आपने जिक्र किया, वे जनता के आक्रोश से डरे हुए हैं, यही वजह है कि वे घरों के अंदर दुबके हुए

जब पत्रकारों ने ईडी, सीबीआई और आयकर विभाग जैसी केंद्रीय एजेंसियों का जिक्र किया, तो अखिलेश यादव ने अपनी बात को और विस्तार से समझाते हुए कहा कि आपने ईडी, सीबीआई और इनकम टैक्स से जुड़ी बात को ठीक से नहीं समझा। मैं सत्ता संघर्ष की बात कर रहा था। अगर ईडी, सीबीआई या इनकम टैक्स इसमें शामिल होते, तो जांच की कमान किसके हाथ में होती? दिल्ली नेतृत्व के कुछ भी कदम उठाने से पहले, लखनऊ गुट ने सब कुछ अपने नियंत्रण में ले लिया। क्या आप इतनी सी बात भी नहीं समझ सकते? यह एसआईटी क्या है? इसकी रिपोर्ट किसे सौंपी गई? आप इस साधारण से सच को भी नहीं समझ पा रहे हैं।

उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री ने आगे आरोप लगाया कि जांच एजेंसी का चुनाव खुद सत्ताधारी दल के भीतर के आंतरिक राजनीतिक समीकरणों को दशार्ता है। उन्होंने तंज कसते हुए कहा, "पैसे को देखकर लोग पूरी तरह से अपना आपा खो बैठे हैं। हमारा मानना है कि जो कोई भी भगवान राम के जीवन का अध्ययन करता है, वह 'लक्ष्मण रेखा' (मयार्दा की रेखा) के बारे में जानता है फिर भी यहां हर किसी ने 'मयार्दा' की सीमाओं को लांघ दिया है।

इस बीच, राम मंदिर दान विवाद को लेकर उत्तर प्रदेश की बीजेपी सरकार पर लगातार हो रहे हमलों को लेकर बीजेपी

रक्षा, व्यापार और यूरेनियम पर महामंथन; पीएम मोदी के ऑस्ट्रेलिया दौरे से पहले बोले हाई कमिश्नर फिलिप ग्रीन

(जीएनएस)।

नई दिल्ली: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी आज से 11 जुलाई तक इंडोनेशिया, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड के दौरे पर हैं। पीएम मोदी ने अपने छह दिवसीय दौरे की शुरूआत इंडोनेशिया से की है। इसी बीच पीएम मोदी के ऑस्ट्रेलिया जाने से पहले भारत में ऑस्ट्रेलिया के हाई कमिश्नर फिलिप ग्रीन ने इस यात्रा से रक्षा, व्यापार, ऊर्जा, शिक्षा और लोगों के बीच आपसी संबंधों के क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को नई गति मिलने की उम्मीद जताई है।

ऑस्ट्रेलिया के हाई कमिश्नर ने कहा कि यह हमारे लिए एक महत्वपूर्ण यात्रा है। भारत के प्रधानमंत्री के रूप में यह पीएम मोदी की तीसरी यात्रा है। वह मेलबर्न आएंगे, जो सबसे बड़ी ऑस्ट्रेलियाई राजधानियों में से एक है और भारतीय प्रवासियों के लिए एक प्रमुख स्थान है। देखिए, मैं यह अनुमान नहीं लगाने जा रहा हूँ कि हमारे नेता किस विषय पर चर्चा करना और उसे जारी करना चुन सकते हैं, लेकिन मैं इतना जरूर कहूंगा कि हमारे संबंध रणनीतिक संरेखण के तीन क्षेत्रों द्वारा आगे बढ़ रहे हैं।

एएनआई से बात करते हुए उन्होंने कहा कि पहला, रक्षा और सुरक्षा के क्षेत्र में। दूसरा, क्योंकि हमारी अर्थव्यवस्थाएं एक-दूसरे की पूरक हैं और हमारे पास बहुत सारे अवसर हैं, और तीसरा, क्योंकि अब ऑस्ट्रेलिया में भारतीय मूल के दस लाख से अधिक लोग हैं, जो हमारे समुदाय में एक बड़ी संख्या है। वे हमारे समाज में एक बहुत बड़ा योगदान देते हैं। वे, साथ ही अन्य ऑस्ट्रेलियाई, प्रधानमंत्री मोदी का गर्मजोशी से स्वागत कर रहे हैं और मुझे लगता है कि यह काफी हलचल पैदा करने वाला है।

उन्होंने आगे कहा कि हमने चार क्षेत्रों की पहचान की है जो हमें लगता है कि ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच वास्तव में बड़े अवसरों वाले क्षेत्र हैं, और वे हैं: शिक्षा, कृषि और खाद्य, पर्यटन, और हरित ऊर्जा आपूर्ति श्रृंखला। इन सभी पर, हम उल्लेखनीय सफलता दिखा रहे हैं। पिछले पांच वर्षों में, दुनिया के लिए भारत का निर्यात 40% बढ़ा है। यह सुनने में बहुत ज्यादा लगता है, लेकिन इसी अवधि में, ऑस्ट्रेलिया के लिए भारत का निर्यात 200% बढ़ा है। दुनिया के बाकी हिस्सों की तुलना में पांच गुना तेजी से। इसलिए, हम देखते हैं कि यहां बड़े अवसर होंगे।

यूरेनियम ये जुड़े एक सवाल का जवाब देते हुए उन्होंने कहा कि खाड़ी युद्ध के संकट के बाद, हम सभी ऊर्जा आपूर्ति की सुरक्षा के बारे में सोच रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया और भारत के बीच, हमारे पास पहले से ही एक अच्छा प्रवाह है, चाहे वह कोयला हो, चाहे डीजल हो, चाहे विमानन ईंधनहो, चाहे एलएनजी हो।

सम्पादकीय

ईरान के सर्वोच्च नेता खामनेई के अंतिम दर्शन और राजकीय विदाई

ईरान के सर्वोच्च नेता आयतुल्लाह अली खामेनेई के निधन के साथ पामि एशिया की राजनीति का एक ऐतिहासिक अध्याय समाप्त हो गया।

तीन दशकों से अधिक समय तक ईरान का नेतृत्व करने वाले खामेनेई केवल एक राजनीतिक व्यत्तित्व नहीं थे, बल्कि करोड़ों ईरानियों के लिए आध्यात्मिक मार्गदर्शक, राष्ट्रीय एकता के प्रतीक और देश की स्वतंत्र विदेश नीति के सबसे प्रमुख चेहरों में से एक थे।

उनके अंतिम दर्शन और राजकीय विदाई समारोह ने यह स्पष्ट कर दिया कि वे अपने समर्थकों के बीच कितने लोकप्रिय थे। राजधानी तेहरान की सड़कों पर लाखों लोगों का जनसैलाब उमड़ पड़ा। महिलाएं, पुरुष, युवा, बुज़ुर्ग, छात्र, सैनिक और आम नागरिक–हर वर्ग के लोग अपने प्रिय नेता को अंतिम विदाई देने पहुंचे। अनेक देशों के राष्ट्राध्यक्षों, प्रधानमंत्रियों, विदेश मंत्रियों तथा विशेष प्रतिनिधियों की उपस्थिति ने भी इस समारोह को विश्व राजनीति की सबसे महत्वपूर्ण घटनाओं में शामिल कर दिया।

इतिहास में वुछ ही ऐसे नेता हुए हैं जिनकी अंतिम यात्रा में जनसैलाब ने इतना विशाल स्वरूप लिया हो। चाहे समर्थक हों या आलोचक, इस बात से शायद ही कोई इनकार कर सके कि आयतुल्लाह खामेनेई ने अपने व्यत्तित्व, नेतृत्व क्षमता और वैचारिक दृढ़ता से ईरान के राजनीतिक और धरमिक जीवन पर अमिट छाप छोड़ी। उनके नेतृत्व में ईरान ने अनेक अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों, युद्ध जैसी परिस्थितियों और वूटनीतिक दबावों का सामना किया, फिर भी अपनी नीतियों और राष्ट्रीय संप्रभुता पर दृढ़ रहने का प्रयास किया।

उनके समर्थकों के लिए वे केवल एक सर्वोच्च नेता नहीं, बल्कि आत्मसम्मान, प्रतिरोध और राष्ट्रीय अस्मिता के प्रतीक थे। यही कारण है कि उनके निधन के बाद पूरे ईरान में शोक की ऐसी लहर देखने को मिली, जिसने दुनिया का ध्यान अपनी ओर आर्कषित किया।

यह कहना कठिन है कि भविष्य में कोई अन्य नेता उनके समान प्रभाव, स्वीकार्यता और वैचारिक पहचान स्थापित कर पाएगा। हर युग अपने साथ वुछ ऐसे व्यत्तित्व लेकर आता है जो समय की सीमाओं से आगे निकल जाते हैं। आयतुल्लाह अली खामेनेई भी ऐसे ही नेताओं में गिने जाएंगे, जिनका प्रभाव केवल उनके जीवनकाल तक सीमित नहीं रहेगा।

आने वाले वर्षो में ईरान नई चुनौतियों और नए नेतृत्व के साथ आगे बढ़ेगा, लेकिन खामेनेई की स्मृतियां, उनके भाषण, उनके निर्णय और उनके नेतृत्व का प्रभाव देश की राजनीति, धरमिक संस्थाओं और राष्ट्रीय विमर्श में लंबे समय तक महसूस किया जाएगा। उनके समर्थकों के लिए वे सदैव "रहबर–ए–इंकलाब" रहेंगे, जिनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

इतिहास नेताओं का मूल्यांकन समय के साथ करता है, लेकिन यह र्निविवाद है कि आयतुल्लाह अली खामेनेई ने ईरान के आधुनिक इतिहास को गहराई से प्रभावित किया। उनके निधन से एक युग का अंत हुआ है, पर उनकी विरासत और स्मृतियां ईरान के इतिहास में लंबे समय तक जीवित रहेंगी।

यूपी परिवहन विभाग में भर्ती घोटाले पर सीएम योगी सख्त, कंपनियों के खिलाफ जांच और ब्लैकलिस्ट की तैयारी

(जीएनएस)।

लखनऊः पिछले चार माह से परिवहन विभाग की नौकरी से निकाले गए पीड़ित विभाग के चक्कर काट रहे हैं. न्याय मांग रहे हैं, लेकिन उनकी सुनवाई नहीं हो रही है. परिवहन विभाग में ड्राइविंग लाइसेंस बनाने वाली कंपनियों की अंधेरगर्दी की दर्जनों शिकायतें भी परिवहन विभाग के अधिकारियों से लेकर परिवहन मंत्री तक की गई, लेकिन इन शिकायतों का समाधान करने के बजाय ठंडे बस्ते में डाल दिया गया.

जब कहीं से पीड़ितों को न्याय की उम्मीद नजर नहीं आई तो वे सोमवार को सीधे उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जनता दरबार में अपनी फरियाद लेकर पहुंचे.

जानकारी देते पीड़ित. (श्रींङ्क उ१ी्रि३ः एळश ईं१३)

मुख्यमंत्री की सख्ती से हड़कंपः यहां पर मुख्यमंत्री ने उनकी समस्या सुनी और तत्काल अधिकारियों को जांच करने के लिए निर्देशित किया. इसके बाद परिवहन विभाग के अधिकारी जो पीड़ितों की शिकायत सुनने तक को तैयार नहीं थे उनके फोन खुद ही पीड़ितों के पास आने लगे. अब उन्हीं अधिकारियों ने पीड़ितों की शिकायत सुनने के लिए याद किया है. मुख्यमंत्री की सख्ती के बाद अब पीड़ित बेरोजगारों को न्याय मिलने की पूरी उम्मीद है. मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जनता दरबार में फरियादी तब शिकायत लेकर पहुंचते हैं जब उनकी कहीं कोई सुनवाई नहीं होती है. दौड़ते–दौड़ते थक जाते हैं.

नौकरी के नाम पर लाखों की ठगीः मुख्यमंत्री के पास पहुंचने के बाद ही उनमें न्याय की उम्मीद जागती है. ऐसा ही परिवहन विभाग में ड्राइविंग लाइसेंस के लिए नौकरी पर रखे गए कर्मचारियों के साथ हुआ. परिवहन विभाग ने ड्राइविंग लाइसेंस बनाने के लिए जिन तीन कंपनियों सिल्वर टच, फोकॉम डॉट नेट और रोजमार्टा को ठेका दिया, उन कंपनियों ने भ्रष्टाचार के खिलाफ जीरो टॉलरेन्स पॉलिसी लागू करने वाली सरकार में भ्रष्टाचार की इंतिहा कर डाली. प्रदेश भर में तमाम कर्मचारियों को पहले नौकरी के नाम पर पैसा लेकर रखा और इसके बाद मनमानी ढंग से किसी को एक माह तो किसी को दो माह नौकरी करने के बाद बाहर का रास्ता दिखा दिया.

कंपनियों के प्रतिनिधियों पर गंभीर आरोपः 50 कर्मचारियों को बिना कोई कारण बताए ही नौकरी से हटा दिया गया. कर्मचारी बेरोजगार हुए तो उन्होंने कंपनियों के भ्रष्टाचार की कलई खोल दी. पीड़ितों का आरोप है कि नौकरी पर रखने के नाम पर कंपनियों ने तीन–तीन लाख रुपये वसूले. कार्यालय में लगने वाले उपकरण भी कर्मचारियों से ही खरीदवाए और एक झटके में ही नौकरी से बाहर भी कर दिया, पैसे भी वापस नहीं किए. उल्टा नौकरी के दौरान जो 11,506 रुपये सैलरी दे रहे थे, वह भी महीने में कंपनियों के प्रतिनिधि वापस ले रहे थे.

मुख्यमंत्री योगी ने दिया जांच का आदेशः नौकरी से निकल गए पीड़ित जब कंपनियों के भ्रष्टाचार की शिकायत लेकर परिवहन विभाग पहुंचते हैं तो यहां उन्हें टाल दिया जाता है. सीनियर अधिकारी जूनियर अधिकारियों के पास भेज देते हैं और जूनियर अधिकारी आश्वासन की घुट्टी पिलाकर पीड़ितों को वापस घर भेज देते हैं. यह सिलसिला पिछले कई माह से चल रहा है. जब पीड़ितों को महसूस हुआ कि अब उनकी सुनवाई परिवहन विभाग में नहीं होगी तो वह सोमवार को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जनता दरबार में पहुंचे. यहां पर पीड़ितों ने अपनी

आपबीती मुख्यमंत्री को सुनाई जिसके बाद सख्त लहजे में मुख्यमंत्री ने निर्देश दिया कि इस पूरे मामले की गंभीरता से जांच कराई जाए और दोषी कंपनियों पर कार्रवाई हो तथा पीड़ितों को न्याय दिया जाए.

जांच शुरू होने से जगी आसः इसके बाद विभाग में खलबली मच गई, आनन–फानन में वही अधिकारी जो पीड़ितों से मिलने तक से कतरा रहे थे, वही वापस फोन कर दफ्तर में मिलने के लिए बुलाने लगे. अब पीड़ितों की सुनवाई शुरू हुई है और मामले की जांच भी गंभीरता से शुरू करने की बात कही गई है. नौकरी से निकाले गए पीड़ितों ने अपना दर्द बयां किया. रायबरेली में डाटा एंट्री ऑपरेटर के पद से हटाए गए पीड़ित अखिलेश का कहना है कि समस्या के समाधान के लिए लगातार परिवहन विभाग के अधिकारियों के कई माह से चक्कर काटते रहे, लेकिन कहीं कोई सुनवाई नहीं हुई. झूठी दिलासा अधिकारी देते रहे. थक हारकर जब मुख्यमंत्री के जनता दरबार में पहुंचे तो वहां पर अब आस जागी है कि न्याय मिलेगा.

लाखों की घूस और उपकरण खरीद के बिलः भ्रष्टाचार फैला रही कंपनियां ब्लैकलिस्ट होंगी और हमें हमारी नौकरी वापस मिलेगी. रायबरेली में ही डाटा एंट्री ऑपरेटर के पद पर नौकरी करने वाले अनुज को बिना बताए ही नौकरी से हटा दिया गया. पीड़ित अनुज ने जनता दरबार में मुख्यमंत्री को अपनी व्यथा सुनाई तो मुख्यमंत्री ने भी उन्हें भरोसा दिया कि जो भी कंपनियां गलत कर रही हैं, उनकी जांच कराई जाएगी और न्याय मिलेगा. अनुज का कहना है कि मुख्यमंत्री के आश्वासन के बाद हमें उम्मीद है कि अब हम लोगों को नौकरी वापस मिलेगी और कंपनी ब्लैकलिस्ट होगी. उनका कहना है कि कंपनियां मानकों का उल्लंघन कर रही हैं, तय संख्या से ज्यादा भर्तियां की गईं, जिससे कमाई की जा सके. सभी से तीन लाख से लेकर पांच लाख रुपये लिए गए हैं, अभी रोजमार्टा कंपनी ने 15 नई भर्ती की हैं. यह सब कंपनियां बहुत गलत कर रही हैं, अब जांच में सब सामने आ जाएगा.

परिवहन मंत्री ने दिया कार्रवाई का आश्वासनः पीड़ित नीरज यादव का कहना है कि मुझे कंपनी ने कानपुर में नौकरी पर रखा था. ढाई लाख रुपये भर्ती के नाम पर लिए गए और वहां पर कंप्यूटर से लेकर सीपीयू और अन्य उपकरण खरीद कर लगाने के लिए कहा गया जिसका मेरे पास बिल भी है. सारे बिल और दस्तावेज जनता दरबार में मुख्यमंत्री को सौंप दिए हैं. इन कंपनियों ने परिवहन विभाग में बहुत भ्रष्टाचार फैलाया है, अब मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने सख्ती दिखाई है तो अब गंभीरता से जांच होगी तो हमें जरूर न्याय मिलेगा. उत्तर प्रदेश के परिवहन राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) दया शंकर सिंह से जब सवाल किया गया कि आखिर कंपनियों ने इतना भ्रष्टाचार फैलाया तो फिर गंभीरता से जांच क्यों नहीं की जा रही है? इस पर परिवहन मंत्री ने कहा कि निश्चित तौर पर इस पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराएंगे, जो भी रिपोर्ट आएगी, कार्रवाई होगी. अगर कंपनियां जिम्मेदार होंगी तो ब्लैकलिस्ट करेंगे और नौकरी से निकाले गए कर्मचारियों को नौकरी पर वापस लिया जाएगा.

'आमिर खान को हिंदू औरतें पसंद, अब तक 3 के साथ', भाजपा की 37 साल की मुस्लिम महिला नेता का बड़ा बयान, मचा हंगामा

(जीएनएस)।

बॉलीवुड सुपरस्टार आमिर खान इन दिनों अपनी तीसरी शादी को लेकर लगातार सुर्खियों में बने हुए हैं। हाल ही में उन्होंने गौरी स्प्रैट के साथ एक निजी समारोह में शादी कर अपनी जिंदगी की नई शुरूआत की है। शादी की तस्वीरें सामने आने के बाद जहां फैंस से लेकर सेलेब्स तक उन्हें बधाइयां दे रहे हैं, वहीं सोशल मीडिया पर उनकी निजी जिंदगी को लेकर बहस का दौर भी शुरू हो गया है।

इसी बीच इखढ की महिला नेता नाजिया इलाही खान का एक बयान सामने आया है, जिसने आमिर खान–गौरी स्प्रैट की शादी की चर्चा को और तेज कर दिया है। उनके बयान के बाद सोशल मीडिया पर लोगों की अलग–अलग प्रतिक्रियाएं देखने को मिल रही हैं।

नाजिया इलाही खान के बयान से बढ़ी हलचल

–आमिर खान की तीसरी शादी पर प्रतिक्रिया देते हुए नाजिया इलाही खान ने एक्टर की पिछली शादियों का जिक्र किया। उन्होंने सवाल उठाते हुए कहा कि आमिर खान की सभी पत्नियां हिंदू

समुदाय से क्यों रही हैं। अपने बयान में उन्होंने ये भी कहा कि एक्टर ने जिन महिलाओं से शादी की है, वो सभी हिंदू थीं और बाद में उनसे तलाक हो गया।

–नाजिया इलाही खान ने आगे ये भी सवाल किया कि अगर आमिर खान को हिंदू महिलाओं से शादी करना पसंद है, तो क्या उन्हें धर्म परिवर्तन पर भी विचार करना चाहिए। उनके इस बयान के सामने आने के बाद सोशल मीडिया पर बहस का माहौल बन गया है। हालांकि आपको बता दें कि आमिर खान की तीसरी पत्नी गौरी स्प्रैट ईसाई धर्म का पलान करती हैं।

–गौरी स्प्रैट एंग्लो–इंडियन मूल की हैं। वह मूल रूप से बेंगलुरु की रहने वाली हैं। फिलहाल वह आमिर खान के प्रोडक्शन हाउस के साथ काम कर रही हैं। इसके अलावा वह हेयरड्रेसिंग और सैलून बिजनेस से भी जुड़ी हुई हैं। –गौरी स्प्रैट के पिता तमिल–ब्रिटिश और मां पंजाबी–आयरिश मूल की थीं। उनके दादा ब्रिटिश थे जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया था।

–मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार आमिर खान की तीसरी पत्नी गौरी स्प्रैट ईसाई धर्म का पालन करती हैं। उनके पिता तमिल–ब्रिटिश और मां पंजाबी–आयरिश थे। ऐसे में उनके घर पर कई तरह के त्योहार मनाए जाते थे। गौरी खुद को गर्व से भारतीय मानती हैं और ईसाई धर्म का ही पालन करती हैं। आपको बता दें कि गौरी स्प्रैट एक 6 साल के बेटे की मां भी हैं।

केजरीवाल ने पूछा था नितिन नवीन कौन हैं? पीएम मोदी ने बिना नाम लिए दिया जवाब

(जीएनएस)।

आम आदमी पार्टी के मुखिया और दिल्ली के पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने रविवार को पूछा कि नितिन नवीन कौन हैं? इसके बाद से बीजेपी के सभी नेताओं ने अरविंद केजरीवाल की आलोचना की। अब प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी बिना नाम लिए अरविंद केजरीवाल को जवाब दिया है। दरअसल जब अरविंद केजरीवाल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर नितिन नवीन से पूछा आप कौन हैं, उसके बाद से ही इसपर चर्चा शुरू हो गई।

इसके बाद एक पत्रकार पीयूष पद्माकर जिन्होंने नितिन नवीन के साथ पढ़ाई की है, उन्होंने उनके बारे में कुछ बातें बताई। पत्रकार के ही पोस्ट का स्क्रीनशॉट शेयर करते हुए पीएम मोदी ने लिखा, 'यह सादगी और सरलता हर भाजपा कार्यकर्ता के लिए गर्व की बात है।' पत्रकार पीयूष पद्माकर ने नितिन नवीन को अपना दोस्त बताते हुए पुराना किस्सा शेयर किया।

पीयूष ने अपने पोस्ट में लिखा, 'नितिन नवीन कौन? नितिन कैसे यहां तक पहुंचे? क्या नितिन की तरह कोई और भी 45 साल में बीजेपी अध्यक्ष बन सकता है? नितिन ने आज लखनऊ में अपनी पॉलिटिकल जर्नी के बारे में कुछ बातें बीजेपी नेताओं को बताई। नितिन ने जो बातें नहीं बताई वो बताता हूं। ये कहानी साल 1998 से शुरू होती है। मैं और नितिन दोनों

Piyush Padmakar
@PiyushPadmakar
Show translation
नितिन नवीन चेप्टर 2: जून के बाद अगले कुछ महीने हम साथ ही एक ही कॉलेज में पढ़ने लगे। दिल्ली के IP Extension इलाक़े में मल्टी स्टोरी buildings बनी हैं। रहने का मन तो वहां था। लेकिन मैं, नितिन, विश्वजीत और सीताराम , चार दोस्त मिलकर भी दिल्ली-92 पटपड़गंज के अपार्टमेंट्स में फ़्लैट नहीं ले पाए। मुझे आज भी याद है वाघवा Property डीलर की दुकान थी। बेंच पर मैं और नितिन बैठे थे। सस्ता मकान दिलाने की बात कह रहे थे। उसने पूछा पिताजी क्या करते हैं। मैंने ही नितिन का भी परिचय करवाया। जैसे ही दिल्ली के प्रॉपर्टी डीलर को पता चला किरायेदार के पिता बिहार की राजधानी पटना के विधायक हैं उसने महंगे फ़्लैट दिखाने शुरू कर दिए। बाद में नितिन ने ही कहा, हमारा बजट महीने का दो हज़ार है। पापा इससे ज़्यादा नहीं देंगे। रहना, खाना, कॉलेज जाना, सब दो हज़ार रुपए में करना होगा। इसके बाद अपार्टमेंट में रहना भूलना पड़ा। पश्चिम विनोद नगर के मंडावली इलाक़े में अंदर की गली में आज का बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन अपने तीन दोस्तों के साथ रहने लगा। नौकर या मेड रखने के पैसे थे नहीं। दो दोस्त सुबह सुबह ब्रेकफास्ट बनाते तो बाकी दो दोस्त बर्तन धोते। झाड़ू पोछा लगाते। शुरू शुरू में मैं और नितिन एक साथ ड्यूटी पर लगे। दोनों मिलकर झूठे बर्तन भी धो लेते थे। झाड़ू भी लगा लेते थे। पोछा भी। फिर फटाफट तैयार होकर दो बस बदलकर कॉलेज पहुंच जाते थे। नितिन उस ज़माने में भी चारों दोस्तों में सबसे ज़्यादा अनुशासित और मिलनसार था। झगड़े हमारे होते तो सुलझाता नितिन था।

दिल्ली में ही पढ़ते थे। दोनों ने बारहवीं की पढ़ाई पूरी की। वो उरङट में पढ़ता था और मैं केंद्रीय विद्यालय में। नितिन के पिताजी विधायक थे लेकिन मुझे बहुत मानते थे। मेरे पिताजी और नवीन जी बरसों पुराने दोस्त थे।'

पीयूष ने बताया कि 1998 के मई और जून के महीने में मैं और नितिन साथ एक ही कमरे में रहते थे। उन्होंने बताया, '12वीं पास होने के बाद हम दिल्ली के अलग अलग कॉलेज में दाखिले की दौड़ में शामिल हुए थे। नितिन विधायक का बेटा था लेकिन घमंड एक पैसे का नहीं। लंच में बीस रुपए की थाली हम शेयर करते थे ताकि दस रुपए बच सके। डीटीसी बस में चलते थे, ताकि ऑटो का किराया बच सके। टैक्सी ले लें, इतनी बात नितिन के मुंह से कभी निकली भी नहीं। उस जमाने में टैक्सी का मतलब पचास रुपये से ऊपर का खर्च था। हमारे छह सात दोस्त अगर आ जाते तो हम दोनों सोचते थे आज थाली कैसे ऑर्डर की जाए ताकि कम खर्च हो। उस वक्त भी नितिन ने कभी किसी को दिखाने या जताने के लिए भी नहीं कहा– वो टछअ का बेटा है।'

पीयूष ने आगे बताया, 'जून के बाद अगले कुछ महीने हम साथ ही एक ही कॉलेज में पढ़ने लगे। दिल्ली के क्ढ ए७३ील्ल२ङ्मल्ल इलाके में मल्टी स्टोरी बिल्डिंग बनी हैं। रहने का मन तो वहां था। लेकिन मैं, नितिन, विश्वजीत और सीताराम , चार दोस्त मिलकर भी दिल्ली–92 पटपड़गंज के अपार्टमेंट्स में फ़्लैट नहीं ले पाए। मुझे आज भी याद है वाघवा प्रॉपर्टी डीलर की दुकान थी। बेंच पर मैं और नितिन नवीन बैठे थे। सस्ता मकान दिलाने की बात कह रहे थे। उसने पूछा पिताजी क्या करते हैं। मैंने ही नितिन का भी परिचय करवाया। जैसे ही दिल्ली के प्रॉपर्टी डीलर को पता चला किरायेदार के पिता बिहार की राजधानी पटना के विधायक हैं उसने महंगे फ़्लैट दिखाने शुरू कर दिए। बाद में नितिन ने ही कहा, हमारा बजट महीने का दो हजार है। पापा इससे ज्यादा नहीं देंगे। रहना, खाना, कॉलेज जाना, सब दो हजार रुपए में करना होगा। इसके बाद अपार्टमेंट में रहना भूलना पड़ा।'

पीयूष के अनुसार, 'पश्चिम विनोद नगर के मंडावली इलाके में अंदर की गली में आज का बीजेपी अध्यक्ष नितिन नवीन अपने तीन दोस्तों के साथ रहने लगा। नौकर या मेड रखने के पैसे थे नहीं। दो दोस्त सुबह सुबह ब्रेकफास्ट बनाते तो बाकी दो दोस्त बर्तन धोते। झाड़ू पोछा लगाते। शुरू शुरू में मैं और नितिन एक साथ ड्यूटी पर लगे। दोनों मिलकर झूठे बर्तन भी धो लेते थे। झाड़ू भी लगा लेते थे। पोछा भी। फिर फटाफट तैयार होकर दो बस बदलकर कॉलेज पहुंच जाते थे। नितिन उस जमाने में भी चारों दोस्तों में सबसे ज्यादा अनुशासित और मिलनसार था। झगड़े हमारे होते तो सुलझाता नितिन था।'

सलमान खान की हीरोइन के पास 2000 करोड़ की संपत्ति, करियर के पीक पर छोड़ी इंडस्ट्री, फिर कैसे हो रही इतनी कमाई

(जीएनएस)।

एक समय ऐसा था जब साउथ सिनेमा और बॉलीवुड में एक्ट्रेस रंभा का नाम सफलता की गारंटी माना जाता था। अपनी खूबसूरती, शानदार डांस और स्क्रीन प्रेजेंस के दम पर उन्होंने लाखों दर्शकों के दिलों में जगह बनाई थी। महज 17 साल की उम्र में अभिनय की दुनिया में कदम रखने वाली रंभा ने बहुत कम समय में खुद को इंडस्ट्री की टॉप एक्ट्रेसेस में शामिल कर लिया था।

1990 के दशक के आखिर और 2000 के शुरूआती सालों में रंभा की पॉपुलैरिटी अपने चरम पर थी। तेलुगू, तमिल, कन्नड़, मलयालम और हिंदी फिल्मों में उन्होंने लगातार काम किया और हर भाषा के दर्शकों के बीच अपनी अलग पहचान बनाई।

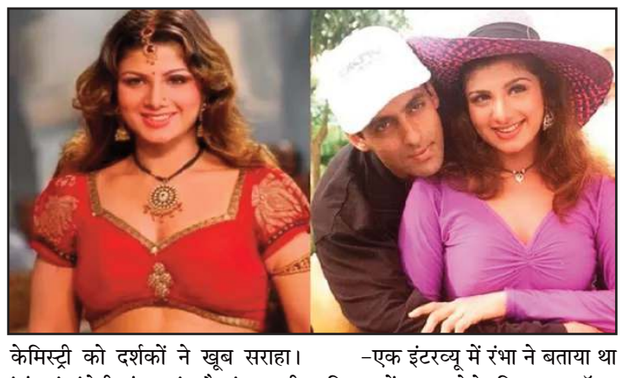

फिल्मी करियर के शुरूआती दौर में ही रंभा ने साउथ इंडियन सिनेमा के लगभग सभी बड़े सितारों के साथ काम किया। चिरंजीवी, नागार्जुन, बालकृष्ण, वेंकटेश और राजेंद्र प्रसाद जैसे दिग्गज एक्ट्रों के साथ उनकी जोड़ी को दर्शकों ने खूब पसंद किया था। इसके बाद उन्होंने तमिल सिनेमा में रजनीकांत और विजयकांत जैसे सुपरस्टार्स के साथ भी कई चर्चित फिल्मों में काम किया। उनकी लोकप्रियता धीरे–धीरे पूरे देश में फैल गई और बॉलीवुड के दरवाजे भी उनके लिए खुल गए।

–हिंदी सिनेमा में रंभा को सबसे ज्यादा पॉपुलैरिटी सलमान खान के साथ मिली। दोनों की ऑनस्क्रीन

केमिस्ट्री को दर्शकों ने खूब सराहा। 'बंधन', 'बेटी नंबर 1' और 'घरवाली बाहरवाली' जैसी फिल्मों ने उन्हें बॉलीवुड में भी मजबूत पहचान दिलाई।

–उस दौर में रंभा उन चुनिंदा एक्ट्रेसेस में शामिल थीं, जो एक साथ कई फिल्म इंडस्ट्री में एक्टिव थीं और हर जगह सफलता हासिल कर रही थीं। यही वजह थी कि उन्हें उस समय की सबसे ज्यादा फीस लेने वाली एक्ट्रेसेस में भी गिना जाता था।

जब बदलने लगा करियर का दौर

–लंबे समय तक सफलता का स्वाद चखने के बाद रंभा के करियर में बदलाव आने लगा। नई एक्ट्रेसेस की एंट्री के बीच उन्हें पहले जैसे लीड किरदार मिलने कम हो गए। धीरे–धीरे उनके पास छोटे और सीमित रोल आने लगे।

–एक इंटरव्यू में रंभा ने बताया था कि उन्हें कुछ ऐसे किरदार ऑफर किए जा रहे थे, जिनसे वह सहज महसूस नहीं करती थीं। उनके मुताबिक कई फिल्मों में उन्हें ऐसे रोल करने के लिए कहा गया जो उनकी छवि और पसंद के अनुरूप नहीं थे। उन्होंने ऐसे प्रस्तावों को ठुकराना बेहतर समझा और केवल नाम के लिए काम करने से इनकार कर दिया।

जब अधिकतर लोग मान रहे थे कि रंभा अभी कई सालों तक फिल्म इंडस्ट्री पर राज करेंगी, तभी उन्होंने ऐसा फैसला लिया जिसने सभी को हैरान कर दिया। साल 2010 में उन्होंने कनाडा के बिजनेसमैन इंद्रकुमार पद्मनाथन से शादी कर ली। शादी के बाद उन्होंने फिल्मी दुनिया को अलविदा कह दिया और अपने पति के साथ कनाडा में बस गईं। ये फैसला उस समय आया जब वह अभी भी एक पॉपुलर एक्ट्रेस बन चुकी थीं।

शादी के बाद रंभा ने खुद को सिर्फ परिवार तक सीमित नहीं रखा। उन्होंने बिजनेस की दुनिया में भी कदम रखा और अपने पति के कारोबार में सक्रिय भूमिका निभानी शुरू की। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक वह कई व्यावसायिक परियोजनाओं के प्रबंधन और संचालन में भी शामिल हैं। फिल्मी करियर से अलग ये उनकी जिंदगी का नया अध्याय था, जहां उन्होंने एक सफल बिजनेसवुमन के रूप में पहचान बनाने की कोशिश की।

आज रंभा तीन बच्चों की मां हैं। उनकी दो बेटियां और एक बेटा है। वह अपने परिवार के साथ कनाडा में रह रही हैं और पारिवारिक जीवन का मजा उठा रही हैं।

सोशल मीडिया पर वह अक्सर अपने बच्चों और परिवार की तस्वीरें शेयर करती रहती हैं। फैंस भी उनकी पोस्ट्स पर जमकर प्यार लुटाते हैं और उनकी निजी जिंदगी की झलकियां देखना पसंद करते हैं।

नीति टेलर 'थप्पड़ मारा, सिगरेट से सुलगाया', कौन है नीति टेलर? रोते हुए बोलीं–प्यार के बदले मिला घाव

(जीएनएस)।

टीवी की चुलबुली अभिनेत्रियों में से एक नीति टेलर इस वक्त सोशल मीडिया पर काफी चर्चित है, वजह है उनका वो दर्दभरा खुलासा, जिसे सुनने के बाद उनके फैंस बुरी तरह आहत और दुखी हैं। दरअसल प्राइम वीडियो के नए रियलिटी शो 'अलायंस' में नीति ने अपनी रीयल लाइफ का दर्द शेयर किया।

उन्होंने अपनी पर्सनल लाइफ के बारे में बात करते हुए कहा कि 'वो भी एक समय में टॉक्सिक रिलेशनशिप में थीं, जिसने उन्हें इतना दर्द दिया है, जिसे वो कभी नहीं भूल सकती हैं।' नीति ने शो पर मिनी माथुर, रूही दोसानी और देल्बार आर्या के साथ बातचीत के दौरान यह बात बताई।

अपनी ज़िंदगी के उस दौर को याद करते हुए उन्होंने कहा कि 'अक्सर बाली उम्र में आपे से गलतियां हो जाती हैं, आप लोगों को समझ नहीं पाते हैं, मैं 15 साल की थी, मुझसे भी ऐसी गलती हुई, मैं एक हिंसक और साइकोटिक इंसान के चंगुल में फंस गई थी।'

'एक रात उसका दिमाग फिर गया, उस दिन उसका जन्मदिन था। पहले वो किसी बात पर काफी नाराज हो गया और उसके बाद उसने मुझे थप्पड़ मारा और फिर सिगरेट से जला दिया। मैं दर्द से बुरी तरह से कांप उठी थी, उस जलन के घाव का निशान आज भी मेरी जांघ पर है।'

मुझे प्यार के बदला घाव मिलाः नीति टेलर

'लेकिन मैंने उसी वक्त इस रिलेशन को खत्म करने का फैसला किया और उससे बस इतना कहा, 'अलविदा, फिर मिलेंगे' लेकिन खैर, उस समय मैं बहुत छोटी थी। जब आप नासमझ होते हैं, तो लोगों के चरित्र को ठीक से नहीं समझ पाते। वह सनकी था और इसलिए मुझे प्यार के बदला घाव मिला।'

13 अगस्त 2020 को हुई थी नीति और परीक्षित बावा की शादी

इसके बाद उन्होंने अपनी मैरिजड लाइफ के बारे में बात करते हुए कहा कि 'लोग बिना समझे कुछ भी उड़ा देते हैं। दरअसल नीति ने परीक्षित बावा के साथ 13 अगस्त 2020 को शादी की थी, दोनों का ये प्रेम विवाह है और दोनों साथ में काफी खुश भी हैं लेकिन साल 2024 में उनके अलग होने की अफवाहें उड़ीं थीं, जिस पर इस कपल ने कोई रिएक्शन नहीं दिया था। नीति ने कहा कि उस वक्त हमें और हमारे रिलेशनशिप को लेकर बहुत कुछ कहा जा रहा था लेकिन हम चुप थे क्योंकि हर बकवास बातों पर रिएक्शन देना जरूरी नहीं है।

कौन हैं नीति टेलर?

आपको बता दें कि 8 नवंबर 1994 को दिल्ली में जन्मी नीति टेलर के पिता गुजराती और मां बंगाली ईसाई हैं। वो टीवी की चुलबुली अभिनेत्रियों में से एक हैं। 15 साल की उम्र में, टेलर ने 2009 में 'प्यार का बंधन' से टेलीविजन पर डेब्यू किया।उन्हें असली पहचान टळश इंडिया के शो 'कैसी ये यारियां' में पार्थ समथान के साथ नंदिनी मूर्ति का किरदार निभाकर मिली।

2016 में वह सिद्धार्थ गुप्ता के साथ म्यूज़िक वीडियो "परिंदे का पागलपन" में नजर आई थी, उन्होंने क्राइम थ्रिलर 'गुलाम' में परम सिंह के साथ शिवानी का किरदार निभाया था और 2019 में, टेलर ने 'इश्कबाज' में मन्नत कौर खुराना से लोकप्रियता हासिल की थी। साल 2022 में, उन्होंने 'झलक दिखला जा 10' में हिस्सा लिया और कोरियोग्राफर आकाश थापा के साथ उनकी जोड़ी बनी। 2023 में, टेलर सोनी टीवी के शो 'बड़े अच्छे लगते हैं 2' में रणदीप राय के साथ प्राची कपूर का किरदार निभाती हुई नजर आईं थी,इन दिनों प्राइम वीडियो के नए रियलिटी शो 'अलायंस' का हिस्सा है।

PRGI No.: UPHIN/25/A1697 Published & Owned by AJAYKUMAR RAMANLAL PRAJAPATI and Printed By SUSHILA SHUKLA at Krishna Printiers, 271/31 Chakmaki Dugawa, Rajendranagar, Lucknow-226018, Uttar Pradesh. and Published from 538 GHA/85 Pataurganj, Near Janki Prasad Dharmshala, Sitapur Road, Niralanagar, Lucknow-226020, Uttar Pradesh. Editor : ASHWANI KUMAR
Rage.Office: TF-01, Nanakram Super Market, Ramnagar, Sabarmati, Ahmedabad - 380 005 Gujarat,India. Phone : (O) 9016333307(M)9328333307,9825333307
Email : garvigujarat2007@gmail.com*garvigujarat2007@yahoo.com*Website : www.garvigujarat.co.in

राममंदिर में चोरी से आहत महंत नृत्यगोपाल दास जताया गहरा दुख, दोषियों को कड़ी सजा की मांग की

(जीएनएस)।

अयोध्या,

श्री राम मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास ने अयोध्या में चढ़ावा चोरी को लेकर गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने दोषियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की मांग की है।

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास ने श्रीरामलला सरकार के मंदिर में चढ़ावे की चोरी की घटना पर गहरा दुख व्यक्त किया है। सोमवार को जारी अपने बयान में उन्होंने कहा कि श्रीरामलला सरकार के मंदिर में हुई चोरी से वे अत्यंत आहत हैं। जिसने भी यह पाप किया है, उसे कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि उन्हें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर पूरा विश्वास है कि इस मामले में जो भी व्यक्ति दोषी होगा, उसके विरुद्ध कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। महंत नृत्यगोपाल दास ने कहा कि यह करोड़ों हिंदुओं की आस्था का विषय है। इसलिए किसी भी व्यक्ति को अपने निजी या राजनीतिक हितों के लिए इस मामले का राजनीतिकरण नहीं करना चाहिए। उन्होंने निष्पक्ष जांच कर सभी दोषियों को सख्त से सख्त दंड देने की मांग की।

शंकराचार्य द्वार पर रहा कड़ा पहरा

अयोध्या। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की बैठक को लेकर आद्य शंकराचार्य द्वार पर कड़ा पहरा रहा। बैठक पहली बार राम मंदिर परिसर में हुई। बैठक के लिए सभी ट्रस्टियों ने शंकराचार्य द्वार से ही मंदिर में प्रवेश किया। द्वार पर सुबह से ही सुरक्षा कड़ी कर दी गई थी। बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स की तनाती कर दी गई थी। शंकराचार्य द्वार की ओर जाने वाली एक लेन को बंद कर दिया गया था। बैरीकेडिंग लगाकर लोगों के आने-जाने पर रोक लगा दी गई थी।

राम मंदिर चढ़ावा चोरी के तीन आरोपियों की 7 दिन की कस्टडी रिमांड पुलिस ने मांगी, मंगलवार को सुनवाई

राम मंदिर चंदा चोरी के आरोपियों की पुलिस ने 7 दिन की और कस्टडी रिमांड मांगी है। पुलिस इनसे और पूछताछ करके जानकारी जुटाना चाहती है। वहीं, सोमवार को राम मंदिर की बैठक हुई।

(जीएनएस)।

अयोध्याः राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले में अयोध्या पुलिस ने कोर्ट से तीन प्रमुख आरोपियों, करुणेश पांडे, अनुकल्प मिश्रा और लवकुश मिश्रा की सात दिन की पुलिस कस्टडी रिमांड की मांग की है। अयोध्या कोर्ट मंगलवार को दोपहर 12 बजे सुनवाई कर फैसला सुनाएगी। ये तीनों आरोपी उन आठ लोगों में शामिल हैं, जिन्हें फिलहाल 13 जुलाई तक न्यायिक हिरासत (ज्यूडिशियल कस्टडी) में रखा गया है।

पुलिस अब इन तीनों से विस्तार से पूछताछ करना चाहती है। पुलिस का कहना है कि कस्टडी रिमांड मिलने पर वह आरोपियों से चोरी के पूरे मामले, चढ़ावे की रकम कहां-कहां गई और अन्य लोगों की भूमिका की जानकारी हासिल करेगी। आरोपियों के मोबाइल फोन भी जब्त कर लिए गए हैं। पुलिस यह जानना चाहती है कि फोन से क्या आरोपियों ने कुछ डेटा डिलीट तो नहीं किया।

अनुकल्प मिश्रा से 16.82 लाख मिले

अनुकल्प मिश्रा से 16.82 लाख रुपये बरामद किए गए हैं। अविनाश शुक्ला से 20.39 लाख रुपये की बड़ी रकम बरामद की गई। पुलिस ने जांच के दौरान उसके पास से डॉलर और कुछ अन्य मुद्रा भी बरामद की। उसके परिसर से जब्त की गई नकदी में 500 रुपये के 3,600 से अधिक नोट, 200 रुपये के 500 से अधिक नोट और 10, 20, और 50 रुपये के नोट शामिल हैं, जिससे स्पष्ट संकेत मिलता है कि उसने यह सब मंदिर में चढ़ावे से अर्जित किया था।

करुणेश पांडे के पास से 18 लाख मिले

करुणेश पांडे के पास से 500, 200, 50, 10 और 20 रुपये के नोट बरामद किए गए। आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार, पुलिस ने उसके पास से कुल 18.07 लाख रुपये नकद बरामद किए हैं। पुलिस सूत्रों ने बताया कि अपराध से अर्जित संपत्ति की तेजी से जांच की जा रही है। राजस्व विभाग से आरोपियों और उनके परिवार के सदस्यों के जमीन रिकॉर्ड मांगे गए थे, जिनमें से अब तक करीब 20 लैंड पार्सल के रिकॉर्ड पुलिस को मिल चुके हैं। इन दस्तावेजों का सत्यापन किया जा रहा है।

SIT को अतिरिक्त समय दिया गया

जांच में यह देखा जा रहा है कि संबंधित संपत्तियां कब खरीदी गईं और आरोपियों का राम मंदिर ट्रस्ट से जुड़ाव कब हुआ। पुलिस के लिए इन दोनों तारीखों का मिलान बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस पूरे मामले में एसआईटी की टीम को जांच के लिए अतिरिक्त समय दिया गया है। सरकार का दावा है कि आरोपियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

दान पेटियों में की हेराफेरी

राम मंदिर चंदा चोरी के मामले में एसआईटी गठित की गई। इसके बाद पुलिस ने आठ लोगों को गिरफ्तार किया, जिनके नाम अविनाश शुक्ला, अनुकल्प मिश्रा, लव कुश मिश्रा, मनीष कुमार यादव, करुणेश पांडे, रामशंकर मिश्रा, सुभाष श्रीवास्तव और रामशंकर यादव उर्फ टिन्नू यादव हैं। इन सभी पर राम मंदिर की दान पेटियों से नकदी और कीमती सामान की हेराफेरी करने की साजिश रचने का आरोप है।

'मैं अमिताभ हूं, यूपी से और अयोध्या जी में जमीन लेनी है', जब 3 बजे रात अभिनंदन लोढ़ा को बिग बी का आया था फोन

(जीएनएस)।

भारत के पवित्र स्थलों में से एक अयोध्या नगरी में फिल्मी सितारे भी प्रॉपर्टी इन्वेस्टमेंट खूब कर रहे हैं जिनमें से एक अमिताभ बच्चन भी शामिल हैं। अब रियल एस्टेट डील करने वाले अभिनंदन लोढ़ा ने उस रात का किस्सा सुनाया जब अमिताभ बच्चन ने उन्हें रात 3 बजे फोन करके जमीन खरीदने की बात कही थी।

अयोध्या में जमीन खरीदने के लिए अमिताभ का कॉल

अयोध्या जैसे शहर अब आस्था के केंद्र के साथ-साथ रियल एस्टेट निवेश के लिए भी लोगों की पहली पसंद बनते जा रहे हैं। आम पब्लिक ही नहीं, इस शहर में निवेश के लिए फिल्मी सितारे भी आगे बढ़ रहे हैं और इनमें से एक अमिताभ बच्चन भी शामिल हैं। अयोध्या में अमिताभ बच्चन ने प्रॉपर्टी खरीदी है, ये तो आप सभी जानते हैं लेकिन इस डील से ठीक पहले क्या कुछ हुआ था, इस बारे में 'द हाउस ऑफ अभिनंदन लोढ़ा' (HoABL) के फाउंडर और चेयरमैन अभिनंदन लोढ़ा ने दिलचस्प वाकया शेयर किया है। उन्होंने बताया कि बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन ने कैसे देर रात खुद उन्हें फोन कर अयोध्या में जमीन खरीदने की इच्छा जताई थी।

लोढ़ा ने बताया कि साल 2023 में वह ऑस्ट्रेलिया में थे। वहां तड़के करीब 3 बजे उनके फोन पर कुछ मिस्ड कॉल आए। इसके बाद एक मेसेज मिला, जिसमें अमिताभ बच्चन की विनम्रता देख वे हैरान रह गए। इस

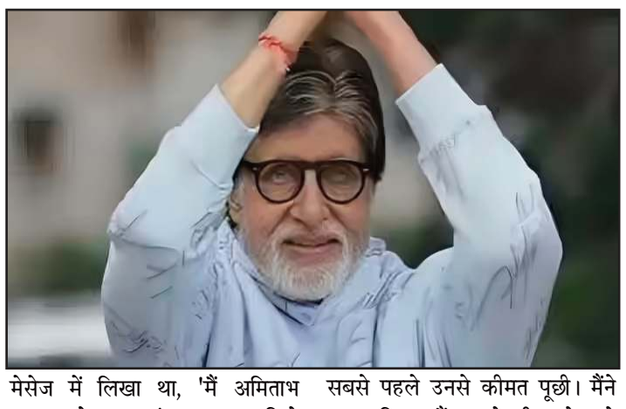

मेसेज में लिखा था, 'मैं अमिताभ बच्चन बोल रहा हूं, जब समय मिले तो कृपया मुझे कॉल करें।'

'सुनते ही मैं उठकर खड़ा हो गया तुरंत अमिताभ बच्चन को फोन किया'

उन्होंने कहा, 'यह सुनते ही मैं उठकर खड़ा हो गया तुरंत अमिताभ बच्चन को फोन किया।' 'हिंदुस्तान टाइम्स इंडिया नेक्स्ट रियल एस्टेट समिट 2026' में इस घटना को याद करते हुए लोढ़ा ने कहा कि उन्हें सबसे ज्यादा बिग बी की सादगी और विनम्रता ने इम्प्रेस किया।

बच्चन साहब ने सबसे पहले उनसे कीमत पूछी

लोढ़ा ने बताया कि अमिताभ बच्चन ने उनसे कहा, 'अभिनंदन जी, मैं यूपी से हूं और मुझे अयोध्या जी में जमीन लेनी है। मैंने उनसे कहा कि हम उनके लिए ये अरेंज कर देंगे।' उन्होंने आगे कहा, 'बच्चन साहब ने सबसे पहले उनसे कीमत पूछी। मैंने जवाब दिया- मैं आपसे कीमत के बारे में कैसे बात कर सकता हूं? उन्होंने कहा कि वे 15,000 सक्वॉयर फुट जमीन खरीदना चाहते हैं और मैंने उनसे कहा कि इतनी जमीन की कीमत करीब 15 करोड़ रुपये के आसपास होगी और अगले ही दिन उन्होंने मुझे 15 करोड़ रुपये भेज दिए।'

अभिनंदन जी, मैं यूपी से हूं और मुझे अयोध्या जी में जमीन लेनी है। बच्चन साहब ने सबसे पहले कीमत पूछी। मैंने जवाब दिया- मैं आपसे कीमत के बारे में कैसे बात कर सकता हूं? उन्होंने कहा कि वे 15,000 सक्वॉयर फुट जमीन खरीदना चाहते हैं और मैंने उनसे कहा कि इतनी जमीन की कीमत करीब 15 करोड़ रुपये के आसपास होगी और अगले ही दिन उन्होंने मुझे 15 करोड़ रुपये भेज दिए।

35 करोड़ रुपये में 2.67 एकड़ जमीन खरीदी

मार्च 2026 में अमिताभ बच्चन ने अयोध्या में अपनी प्रॉपर्टी में इजाफा किया और उन्होंने लङ्कअइछ से करीब 35 करोड़ रुपये में 2.67 एकड़ जमीन खरीदी थी। यह अयोध्या में उनका तीसरा और HoABL के साथ चौथा इन्वेस्टमेंट था। यह जमीन कंपनी के 75 एकड़ में फैले 'द सरयू' प्रोजेक्ट के पास स्थित है।

40 करोड़ रुपये में 25,000 स्क्वॉयर फुट का प्लॉट खरीदा था

बता दें कि इससे पहले मई 2025 में उन्होंने लगभग 40 करोड़ रुपये में 25,000 स्क्वॉयर फुट का प्लॉट खरीदा था। वहीं, 2024 में उन्होंने 'द सरयू' प्रोजेक्ट में 10,000 स्क्वॉयर फुट का प्लॉट करीब 14.5 करोड़ रुपये में खरीदा था।

कृति सैनन और कार्तिक आर्यन ने भी अपने पैसे लगाए हैं

अयोध्या के अलावा अमिताभ बच्चन लङ्कअइछ के 'सोल दे अलीबाग' प्रोजेक्ट में भी करीब 10 करोड़ रुपये का इन्वेस्टमेंट कर चुके हैं। यहां उन्होंने 10,000 वर्ग फुट जमीन खरीदी है। इसी प्रोजेक्ट में कृति सैनन और कार्तिक आर्यन ने भी अपने पैसे लगाए हैं और यहां निवेश किया है।

'जिनको अपने दान की सत्यता जाननी है, कभी भी अयोध्या आ सकता है', राम मंदिर ट्रस्ट की ओर से चढ़ावे को लेकर क्या दी गई जानकारी

(जीएनएस)।

राम मंदिर चंदा चोरी को लेकर ट्रस्ट ने सोमवार को बैठक की। बैठक करीब तीन घंटे तक चली। इसके बाद राम मंदिर ट्रस्ट ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। ट्रस्ट ने हरेक बात की जानकारी दी।

(जीएनएस)।

अयोध्याः राम मंदिर ट्रस्ट की बैठक करीब तीन घंटे चली। इसके बाद ट्रस्ट ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिसमें ट्रस्ट ने हरेक सवाल का जवाब दिया। ट्रस्ट ने बताया कि चंपत राय और अनिल मिश्रा का इस्तीफा स्वीकार कर लिया गया है। अंतरिम महासचिव कृष्ण मोहन को बनाया गया है।

प्रेस कॉन्फ्रेंस खत्म होने के बाद राम मंदिर ट्रस्ट की ओर से प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई, जिसमें बताया कि श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के न्यासियों की बैठक सोमवार को अयोध्या में संपन्न हुई। इसमें प्रमुख रूप से दानपात्रों से प्राप्त राशि की गणना की प्रक्रिया में

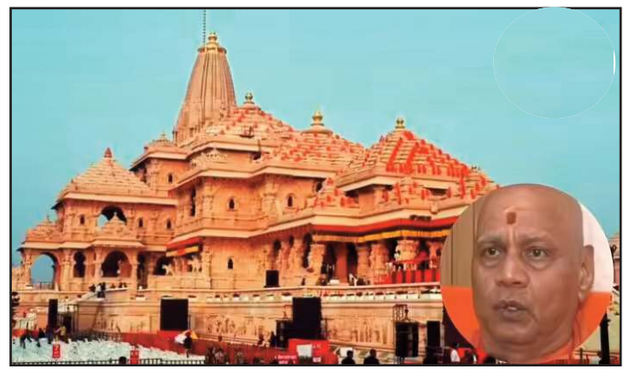

अनियमितता, उसकी जांच और कार्रवाई, महामंत्री और एक न्यासी के न्यासी पद से त्यागपत्रों, मीडिया में चल रही चचाओं, भावी अन्तरिम व्यवस्थाओं आदि विषयों पर विचार हुआ।

2020 में ट्रस्ट की स्थापना के बाद छह वर्ष से कम के अल्पकाल में प्रभु श्री रामलला के भावी और अप्रतिम मंदिर के निर्माण का ऐतिहासिक कार्य सम्पूर्ण हुआ। इसी अवधि में मुख्य मंदिर एवं परकोटे में बने समस्त मंदिरों में प्राण-प्रतिष्ठा, ध्वजारोहण और श्रीराम यंत्र की स्थापना के महती कार्य प्रभु कृपा से सानंद और शास्त्रीय विधि-विधान से संपन्न हुए। न्यास इस सांस्कृतिक धरोहर के निर्माण और अनेक धार्मिक उत्सवों में सहयोगी सम्पूर्ण हिन्दू समाज, श्रमिकों, अभियन्ताओं, शिल्पकारों, वास्तुविदों और केंद्रीय व राज्य सरकारों का हार्दिक आभार मानता है।

31 मार्च तक 582 करोड़ रुपये चढ़ावा मिला

ट्रस्ट ने कहा कि निधि समर्पण अभियान एवं कॉर्पस दान के माध्यम से प्राप्त कुल राशि 3264 करोड़ रुपये में से 2370 करोड़ रुपये निर्माण एवं पूंजीगत व्यय में उपयोग की गई है। प्रारम्भ से लेकर 31 मार्च, 2026 तक कुल चढ़ावा 582 करोड़ रुपये प्राप्त हुआ, जिसमें से 391 करोड़ रुपये की राशि संचालन व्यय में उपयोग ली गई। शेष राशियां बैंक खातों में उपलब्ध है। ये समस्त वितीय सूचनाएं समय-समय पर ट्रस्ट ने मीडिया के समक्ष प्रस्तुत की हैं।

ट्रस्ट के अनुरोध पर एसआईटी गठित हुई

चढ़ावे की राशि की गणना प्रक्रिया में अनियमितता से न्यासीगण आहत एवं चिंतित हैं और इस दुर्भाग्यकारी प्रकरण पर गंभीर खेद व्यक्त करते हैं। इस प्रकरण की जानकारी प्राप्त होने पर पाया है कि ट्रस्ट के अधिकारियों ने अनियमितता के संज्ञान में आने पर प्रारंभिक जानकारी एकत्र करने के बाद उत्तर-प्रदेश शासन से निष्पक्ष जांच का आग्रह किया। ट्रस्ट के अनुरोध पर शासन ने तत्काल उच्च स्तरीय जांच दल (एसआईटी) का गठन किया, ताकि पूरे मामले की निष्पक्ष, व्यापक और तथ्यपरक जांच हो सके। किसकी क्या भूमिका रही, किन लोगों की संलिप्तता है और किसके विरुद्ध मुकदमा दर्ज होना चाहिए-इन सभी प्रश्नों का उत्तर केवल जांच के आधार पर ही संभव था। इसी उद्देश्य से ऐसे जांच दल के गठन के अनुरोध की पहल की गई।

ट्रस्ट ने मुकदमा दर्ज कराया

एसआईटी की प्रारंभिक रिपोर्ट में 8 लोगों के नाम सामने आए। जिनके विरुद्ध प्रथम दृष्टया साक्ष्य मिले, उनके विरुद्ध ट्रस्ट ने मुकदमा दर्ज कराया और गिरफ्तारियां भी हुईं। अब पूरा मामला कानून के अनुसार आगे बढ़ रहा है। ट्रस्ट का स्पष्ट मत है कि जो भी दोषी हो, उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई होकर कठोरतम दंड मिलना चाहिए। एसआईटी का कार्यक्षेत्र सिर्फ जांच तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह सुझाव देना भी है कि ट्रस्ट की व्यवस्थाओं में क्या आवश्यक सुधार करने चाहिए, जिससे व्यवस्था और अधिक सुदृढ़, मजबूत एवं पारदर्शी हो सके।

चंपत राय और अनिल मिश्र ने नैतिक आधार पर त्यागपत्र दिया

एसआईटी की प्रारंभिक रिपोर्ट आने के बाद महामंत्री चंपत राय और ट्रस्टी अनिल मिश्र ने नैतिक आधार पर त्यागपत्र दिया है, जिन्हें आज ट्रस्ट की बैठक में विचारार्थ प्रस्तुत किया गया। ट्रस्ट ने निष्पक्ष जांच के लिए नैतिक आधार पर दिए दोनों के त्यागपत्र को स्वीकार किया है। साथ ही ट्रस्ट ने गोपाल नगरकोटे (गोपाल राव) का नाम विशिष्ट आमंत्रित सदस्य सूची से हटाने का निर्णय किया है। ट्रस्ट का मानना है कि जांच की वैधानिक प्रक्रिया पूरी होने पर सत्य प्रकाशित होगा और तब तक किसी भी व्यक्ति पर दोषारोपण करना उचित नहीं है।

कुछ लोग लगातार भ्रम फैला रहे हैं

ट्रस्ट ने प्रबंधन एवं संचालन की पद्धति और प्रणाली की कमजोरियों को दूर करने और उन्हें सशक्त बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया है और एसआईटी से अपेक्षित अनुशंसाओं के अतिरिक्त विशेषज्ञों से भी स्वतंत्र परामर्श लेने का सुझाव दिया है, जिससे मंदिर प्रबंधन की एक आदर्श, कुशल और पारदर्शी व्यवस्था स्थापित हो सके, जो इस क्षेत्र में अनुकरणीय उदाहरण बने।

कुछ लोग इस दुर्भाग्यपूर्ण प्रकरण को श्रीरामलला मंदिर, श्रीराम जन्मभूमि, हिंदू समाज और व्यापक हिंदू आस्था को कमजोर करने के अवसर के रूप में उपयोग करने का प्रयास कर रहे हैं। आधारहीन आरोप जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य सत्य सामने लाना नहीं, बल्कि निरंतर भ्रम फैलाना है।

तमाम विवादों और दुष्प्रचार के बावजूद श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या एवं श्रद्धा में कमी नहीं आई है। मंदिर में श्रद्धालुओं का आगमन पूर्ववत निरंतर जारी है। यह इस बात का प्रमाण है कि आधारहीन व भ्रामक आरोपों के बाद भी करोड़ों रामभक्तों की आस्था और विश्वास अडिग है।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट, अयोध्या

2926 भेंटें मिली हैं

नकद राशि के अतिरिक्त अनेक श्रद्धालुओं ने वस्तु के रूप में प्रभु श्री रामलला को भेंट अर्पित की हैं। ऐसी कुल 2926 भेंट प्राप्त हुई हैं, जो समस्त, तिथि अनुसार, सम्पूर्ण विवरण के साथ रजिस्टर में दर्ज हैं और उनका भौतिक सत्यापन एक स्वतंत्र चार्टर्ड अकाउंटेंट फर्म द्वारा आंतरिक अंकेक्षक के नाते प्रति वर्ष किया जाता है। काउंटर पर ऐसी भेंट देने वाले समस्त श्रद्धालुओं को रसीद दी गई हैं और काउंटर के अतिरिक्त दी गई भेंट के लिए भी उन समस्त श्रद्धालुओं को रसीद दी गई है, जिन्होंने दानदाता का विवरण दिया। समस्त श्रद्धालुओं से निवेदन है कि जो भी अपनी दी हुई भेंट का उपयोग जानना और सत्यापन करना चाहें, वे कभी भी ट्रस्ट के अधिकारी से तिथि व समय निश्चित कर अयोध्या पधारें और प्रभु श्री रामलला के दर्शन के साथ अपनी भेंट का सत्यापन कर सकते हैं।

चांदी को गलाकर छड़ें बना दी गईं

चांदी की वस्तुओं को भारत सरकार की टकसाल (मिंट) में गला कर छड़ें बनाई गई हैं, जिनके मूल स्वरूप का विवरण फोटो व वजन सहित उपलब्ध है। गलाने के पश्चात चांदी की शुद्धता और कुल वजन के टकसाल के प्रमाण-पत्र भी उपलब्ध हैं।

एसआईटी की सामने साक्ष्य पेश करें

ट्रस्ट का आग्रह है कि यदि किसी व्यक्ति, संस्था या पत्रकार के पास मंदिर से सम्बद्ध किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध अनियमितता के ठोस साक्ष्य हैं, तो उन्हें सार्वजनिक आरोप लगाने के बजाय एसआईटी और संबंधित जांच एजेंसी को उपलब्ध कराया जाए। जांच एजेंसियां प्रमाणों के आधार पर अवश्य कार्रवाई करेंगी।

तीन सदस्यीय समिति गठित

न्यास की बैठक में नए महामंत्री की नियुक्ति होने तक ट्रस्टी कृष्ण मोहन को अंतरिम महामंत्री नियुक्त किया गया है। न्यास ने एक उपयुक्त मुख्य कार्यकारी अधिकारी का चयन करने के निमित्त तीन सदस्यीय समिति का गठन किया है, जो ट्रस्ट को उपयुक्त नामों की अनुशंसा करेगा।

100 दलित उम्मीदवारों के साथ अखिलेश यादव का 'अयोध्या मॉडल' फिर सफल होगा क्या?

(जीएनएस)।

लखनऊ,

अखिलेश यादव आने वाले उत्तर प्रदेश चुनाव में लोकसभा चुनाव के कारगर नुस्खे फिर आजमाने जा रहे हैं. लोकसभा चुनाव में ढऊअ के सफल प्रयोग के बाद आगामी विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी उसे विस्तार देने की योजना पर काम कर रही है - और, बीजेपी से सीधे मुकाबले के लिए निशाना बीएसपी नेता मायावती के वोटर पर टिकी है.

2024 के लोकसभा चुनाव के बाद से ही यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव हर मौके पर ढऊअ (पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक) फैक्टर का जिक्र करते हुए उसकी अहमियत समझाते रहे हैं. अखिलेश यादव को बीएसपी या मायावती पर सीधा हमले से परहेज करते भी देखा जाता रहा है, लेकिन अब मिजाज बदल रहा है. रिपोर्ट के मुताबिक, अखिलेश यादव को लगता है कि दलित वोट बैंक के एक हिस्से को अगर बीएसपी की चुनावी रणनीति समझाने की कोशिश की जाए, तो वे समाजवादी पार्टी का साथ दे सकते हैं - और, अगर ऐसा संभव हुआ तो बीजेपी से मुकाबला थोड़ा आसान हो सकता है.

समाजवादी पार्टी आगामी यूपी विधानसभा चुनाव में भी पिछले लोकसभा चुनाव की ही तरह सामान्य सीटों पर दलित उम्मीदवार उतारने का प्लान कर रही है. लोकसभा चुनाव के बाद अखिलेश यादव अयोध्या (फैजाबाद लोकसभा सीट) के सांसद अवधेश प्रसाद को आगे करके बीजेपी को टार्गेट करते रहे हैं, लगता है आने वाले चुनाव में भी वैसा ही नजारा देखने को मिलने वाला है - सवाल है कि यूपी चुनाव में 100 सीटों पर दलित उम्मीदवार उतारकर समाजवादी पार्टी मायावती के वोटर को क्या संदेश देने की कोशिश कर रही है?

समाजवादी पार्टी का PDA विस्तार अभियान

अखिलेश यादव लगता है अपनी छवि बदलने की कोशिश में लग गए हैं. समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह को लोक पिछड़ों के नेता मानते थे, लेकिन अखिलेश यादव की यादव समुदाय के नेता की छवि बनने लगी थी. बीजेपी विरोध के नाम पर समाजवादी पार्टी को मुस्लिम समुदाय के भी वोट मिल जाते हैं. आने वाले यूपी चुनाव के लिए समाजवादी पार्टी की जो रणनीति सामने आ रही है, मालूम होता है कि दलित वोट बैंक में ढंग से सेंध लगाने की कोशिश है.

ध्यान देने वाली बात यह है कि समाजवादी पार्टी दलित वोटों को ऐसे समय साधने की कोशिश कर रही है, जब मायावती बीएसपी के लिए फिर से दलित और ब्राह्मण वोटों की सोशल इंजीनियरिग पर काम कर रही हैं. समाजवादी पार्टी और उसकी गठबंधन साथी कांग्रेस एक साथ आरोप लगाते हैं कि बीएसपी की चुनावी रणनीति बीजेपी की मदद के लिए होती है.

लेटेस्ट रिपोर्ट के अनुसार, समाजवादी पार्टी आने वाले यूपी चुनाव में 100 दलित उम्मीदवार उतारने जा रही है. उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जाति के लिए 84 और अनुसूचित जनजाति के लिए 2 सीटें आरक्षित हैं. सुरक्षित सीटों पर तो हर पार्टी के दलित उम्मीदवार ही चुनाव लड़ते हैं, समाजवादी पार्टी 14 अनारक्षित सीटों पर भी दलित नेताओं को टिकट देने की योजना पर काम कर रही है.

उत्तर प्रदेश की 403 में से 100 सीटों पर दलित नेताओं को टिकट देने की रणनीति असल में अखिलेश यादव के पीडीए का विस्तार कार्यक्रम है - अब सवाल है कि समाजवादी पार्टी के दलित प्रोजेक्ट का मकसद क्या है?

समाजवादी पार्टी के अंदरूनी सूत्रों के हवाले से इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट में इस सवाल का जवाब है, दलित समुदाय को संदेश भेजने के अलावा इसका मकसद एक व्यापक नैरेटिव तैयार करना भी है, और यह कि समाजवादी पार्टी अब अपनी यादव-मुस्लिम पार्टी वाली छवि से उबर रही है. समाजवादी पार्टी के एक सीनियर नेता का कहना है, यह कदम उठाए जाने का मकसद यह नैरेटिव गढ़ना है कि समाजवादी पार्टी दलितों को आरक्षित सीटों से भी ज्यादा हिस्सेदारी देने को तैयार है... हमने 2024 के लोकसभा चुनाव में भी यही किया था और हमें इसका फायदा मिला था.

देखा जाए, तो लोकसभा चुनाव में अखिलेश यादव का ढऊअ एक्सपेरिमेंट सफल रहा. 2024 लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी ने सामान्य सीट से दो दलित उम्मीदवारों को टिकट दिया था, मेरठ और फैजाबाद. फैजाबाद लोकसभा सीट तो अवधेश प्रसाद ने जीतकर समाजवादी पार्टी को थमा दिया, लेकिन मेरठ में सुनीता वर्मा रामायण में श्रीराम का किरदार निभाने वाले बीजेपी उम्मीदवार अरुण गोविल से महज 10,585 वोटों से हार गईं.

अब सवाल है कि समाजवादी पार्टी कौन कौन सी सामान्य सीटों पर अपने दलित उम्मीदवारों को आजमाने जा रही है?

समाजवादी पार्टी के ही एक नेता ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया है, हम दलित समुदाय के उन उम्मीदवारों को चुनने जा रहे हैं जो सामान्य सीटों पर लड़ सकें... हमारा लक्ष्य इस बार दलितों को 100 सीटें देना है, लेकिन यह मजबूत और उपयुक्त उम्मीदवार मिलने पर ही निर्भर करेगा... जिन सामान्य सीटों पर हम दलित उम्मीदवार उतारने की तैयारी कर रहे हैं, वे मुख्य रूप से ऐसी सीटें हैं जहां समाजवादी पार्टी पहले से बहुत मजबूत स्थिति में नहीं है.

क्या मायावती के प्रति अखिलेश यादव का रुख बदलने वाला है?

ढऊअ में दलित विस्तार योजना का कोई नकारात्मक असर न पड़े, इसका भी इंतजाम पहले से ही किया जा रहा है. एक मुस्लिम समाज से आने वाले समाजवादी पार्टी के एक नेता ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया, 'अखिलेश जी ने यादव और मुस्लिम नेताओं को साफ तौर पर बताया है कि इस बार समाजवादी पार्टी 2024 वाला फॉर्मूला ही अपनाएगी, और दोनों समुदायों को ज्यादा टिकट नहीं दिए जाएंगे... सरकार बनने के बाद ऐसे नेताओं को विधान परिषद के जरिए जगह दी जाएगी.'

और इसके साथ ही अखिलेश यादव धीरे धीरे आक्रामक होने लगे हैं. बीते चुनावों में अखिलेश यादव को बीएसपी वोटर और मायावती के प्रति काफी नरम देखा जा चुका है. संभव है आने वाले चुनाव में ये सब न देखने को मिले. हाल के ही एक सार्वजनिक कार्यक्रम में अखिलेश यादव ने दलित समुदाय से वोट मांगते वक्त अपनी तरफ से हकीकत समझाने की भी कोशिश की. बोले, बीएसपी चाहे बीजेपी के साथ खुलकर हो या छिपकर, बीएसपी को वोट देना अपना वोट गंवाना है.

बीएसपी पर अखिलेश यादव का यह बदला स्टैंड तो यही बता रहा है कि अखिलेश यादव आने वाले चुनाव में दलित वोट हासिल करने के लिए आक्रामक रुख अख्तियार करने वाले हैं. समाजवादी पार्टी के दलित फेस राज्यसभा सांसद रामजी लाल सुमन के मुताबिक, समाजवादी पार्टी को दलित वोटों का बड़ा हिस्सा हासिल करने का पक्का यकीन है. कहते हैं, मैं बीएसपी की आलोचना नहीं करना चाहता, लेकिन उत्तर प्रदेश के लोग समझ चुके हैं कि बीएसपी आखिरकार बीजेपी की मदद करने वाली है. मौजूदा राजनीतिक माहौल में कोई भी राजनीतिक पार्टी हाथ पर हाथ रखे वोट पाने की उम्मीद नहीं कर सकती, जैसा बीएसपी कर रही है... हमें दलित समुदाय से बीजेपी विरोधी वोट मिलेंगे... दलितों को यह एहसास हो गया है कि बीजेपी और आरएसएस की मूल मानसिकता दलित विरोधी है, जो उनके मनुवादी एजेंडे में झलकती है.

उत्तर प्रदेश में 21 फीसदी दलित आबादी है, और वही मायावती की राजनीति का मजबूत आधार है. दलितों के साथ ब्राह्मण वोटर को जोड़कर मायावती 2007 में अकेले दम पर बीएसपी की सरकार बना चुकी हैं, और एक बार फिर सोशल इंजीनियरिंग का वही फॉर्मूला अपनाने की तैयारी कर रही हैं. लेकिन, हालात अच्छे नहीं रह गए हैं. 2022 के यूपी विधानसभा चुनाव में बीएसपी सिर्फ एक सीट ही जीत पाई थी. और, 2017 में 22.23 फीसदी रहा उसका वोट शेयर गिर कर 12.88 फीसदी पहुंच गया था. 2024 के आम चुनाव में तो बीएसपी का वोट शेयर लुढ़क कर 9.4 फीसदी ही रह गया, जबकि 2019 में बीएसपी का वोट शेयर 19.43 फीसदी दर्ज किया गया था - लगता है, अखिलेश यादव समाजवादी पार्टी को मायावती की गिरती लोकप्रियता का फायदा दिलाने की कोशिश कर रहे हैं.

राममंदिर में चोरी से आहत महंत नृत्यगोपाल दास जताया गहरा दुख, दोषियों को कड़ी सजा की मांग की

(जीएनएस)।

अयोध्या, श्री राम मंदिर ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास ने अयोध्या में चढ़ावा चोरी को लेकर गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने दोषियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की मांग की है।

श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष महंत नृत्यगोपाल दास ने श्रीरामलला सरकार के मंदिर में चढ़ावे की चोरी की घटना पर गहरा दुख व्यक्त किया है। सोमवार को जारी अपने बयान में उन्होंने कहा कि श्रीरामलला सरकार के मंदिर में हुई चोरी से वे अत्यंत आहत हैं। जिसने भी यह पाप किया है, उसे कड़ी से कड़ी सजा मिलनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि उन्हें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तथा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पर पूरा विश्वास है कि इस मामले में जो भी व्यक्ति दोषी होगा, उसके विरुद्ध कठोर कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी। महंत नृत्यगोपाल दास ने कहा कि यह करोड़ों हिंदुओं की आस्था का विषय है। इसलिए किसी भी व्यक्ति को अपने निजी या राजनीतिक हितों के लिए इस मामले का राजनीतिकरण नहीं करना चाहिए। उन्होंने निष्पक्ष जांच कर सभी दोषियों को सख्त से सख्त दंड देने की मांग की।

शंकराचार्य द्वार पर रहा कड़ा पहरा

अयोध्या। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की बैठक को लेकर आद्य शंकराचार्य द्वार पर कड़ा पहरा रहा। बैठक पहली बार राम मंदिर परिसर में हुई। बैठक के लिए सभी ट्रस्टियों ने शंकराचार्य द्वार से ही मंदिर में प्रवेश किया। द्वार पर सुबह से ही सुरक्षा कड़ी कर दी गई थी। बड़ी संख्या में पुलिस फोर्स की तनाती कर दी गई थी। शंकराचार्य द्वार की ओर जाने वाली एक लेन को बंद कर दिया गया था। बैरीकेडिंग लगाकर लोगों के आने-जाने पर रोक लगा दी गई थी।

राम मंदिर चढ़ावा चोरी के तीन आरोपियों की 7 दिन की कस्टडी रिमांड पुलिस ने मांगी, मंगलवार को सुनवाई

राम मंदिर चंदा चोरी के आरोपियों की पुलिस ने 7 दिन की और कस्टडी रिमांड मांगी है। पुलिस इनसे और पूछताछ करके जानकारी जुटाना चाहती है। वहीं, सोमवार को राम मंदिर की बैठक हुई।

(जीएनएस)।

अयोध्याः राम मंदिर चढ़ावा चोरी मामले में अयोध्या पुलिस ने कोर्ट से तीन प्रमुख आरोपियों, करुणेश पांडे, अनुकल्प मिश्रा और लवकुश मिश्रा की सात दिन की पुलिस कस्टडी रिमांड की मांग की है। अयोध्या कोर्ट मंगलवार को दोपहर 12 बजे सुनवाई कर फैसला सुनाएगी। ये तीनों आरोपी उन आठ लोगों में शामिल हैं, जिन्हें फिलहाल 13 जुलाई तक न्यायिक हिरासत (ज्यूडिशियल कस्टडी) में रखा गया है।

पुलिस अब इन तीनों से विस्तार से पूछताछ करना चाहती है। पुलिस का कहना है कि कस्टडी रिमांड मिलने पर वह आरोपियों से चोरी के पूरे मामले, चढ़ावे की रकम कहां-कहां गई और अन्य लोगों की भूमिका की जानकारी हासिल करेगी। आरोपियों के मोबाइल फोन भी जब्त कर लिए गए हैं। पुलिस यह जानना चाहती है कि फोन से क्या आरोपियों ने कुछ डेटा डिलीट तो नहीं किया।

दान पेटियों में की हेराफेरी

राम मंदिर चंदा चोरी के मामले में एसआईटी गठित की गई। इसके बाद पुलिस ने आठ लोगों को गिरफ्तार किया, जिनके नाम अविनाश शुक्ला, अनुकल्प मिश्रा, लव कुश मिश्रा, मनीष कुमार यादव, करुणेश पांडे, रामशंकर मिश्रा, सुभाष श्रीवास्तव और रामशंकर यादव उर्फ टिन्नू यादव हैं। इन सभी पर राम मंदिर की दान पेटियों से नकदी और कीमती सामान की हेराफेरी करने की साजिश रचने का आरोप है।

अनुकल्प मिश्रा से 16.82 लाख मिले

अनुकल्प मिश्रा से 16.82 लाख रुपये बरामद किए गए हैं। अविनाश शुक्ला से 20.39 लाख रुपये की बड़ी रकम बरामद की गई। पुलिस ने जांच के दौरान उसके पास से डॉलर और कुछ अन्य मुद्रा भी बरामद की। उसके परिसर से जब्त की गई नकदी में 500 रुपये के 3,600 से अधिक नोट, 200 रुपये के 500 से अधिक नोट और 10, 20, और 50 रुपये के नोट शामिल हैं, जिससे स्पष्ट संकेत मिलता है कि उसने यह सब मंदिर में चढ़ावे से अर्जित किया था।

करुणेश पांडे के पास से 18 लाख मिले

करुणेश पांडे के पास से 500, 200, 50, 10 और 20 रुपये के नोट बरामद किए गए। आधिकारिक रिकॉर्ड के अनुसार, पुलिस ने उसके पास से कुल 18.07 लाख रुपये नकद बरामद किए हैं। पुलिस सूत्रों ने बताया कि अपराध से अर्जित संपत्ति की तेजी से जांच की जा रही है। राजस्व विभाग से आरोपियों और उनके परिवार के सदस्यों के जमीन रिकॉर्ड मांगे गए थे, जिनमें से अब तक करीब 20 लैंड पार्सल के रिकॉर्ड पुलिस को मिल चुके हैं। इन दस्तावेजों का सत्यापन किया जा रहा है।

SIT को अतिरिक्त समय दिया गया

जांच में यह देखा जा रहा है कि संबंधित संपत्तियां कब खरीदी गईं और आरोपियों का राम मंदिर ट्रस्ट से जुड़ाव कब हुआ। पुलिस के लिए इन दोनों तारीखों का मिलान बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है। इस पूरे मामले में एसआईटी की टीम को जांच के लिए अतिरिक्त समय दिया गया है। सरकार का दावा है कि आरोपियों के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी।

'मैं अमिताभ हूं, यूपी से और अयोध्या जी में जमीन लेनी है', जब 3 बजे रात अभिनंदन लोढ़ा को बिग बी का आया था फोन

(जीएनएस)।

भारत के पवित्र स्थलों में से एक अयोध्या नगरी में फिल्मी सितारे भी प्रॉपर्टी इन्वेस्टमेंट खूब कर रहे हैं जिनमें से एक अमिताभ बच्चन भी शामिल हैं। अब रियल एस्टेट डील करने वाले अभिनंदन लोढ़ा ने उस रात का किस्सा सुनाया जब अमिताभ बच्चन ने उन्हें रात 3 बजे फोन करके जमीन खरीदने की बात कही थी।

अयोध्या में जमीन खरीदने के लिए अमिताभ का कॉल

अयोध्या जैसे शहर अब आस्था के केंद्र के साथ-साथ रियल एस्टेट निवेश के लिए भी लोगों की पहली पसंद बनते जा रहे हैं। आम पब्लिक ही नहीं, इस शहर में निवेश के लिए फिल्मी सितारे भी आगे बढ़ रहे हैं और इनमें से एक अमिताभ बच्चन भी शामिल हैं। अयोध्या में अमिताभ बच्चन ने प्रॉपर्टी खरीदी है, ये तो आप सभी जानते हैं लेकिन इस डील से ठीक पहले क्या कुछ हुआ था, इस बारे में 'द हाउस ऑफ अभिनंदन लोढ़ा' (HoABL) के फाउंडर और चेयरमैन अभिनंदन लोढ़ा ने दिलचस्प वाकया शेयर किया है। उन्होंने बताया कि बॉलीवुड के महानायक अमिताभ बच्चन ने कैसे देर रात खुद उन्हें फोन कर अयोध्या में जमीन खरीदने की इच्छा जताई थी।

लोढ़ा ने बताया कि साल 2023 में वह ऑस्ट्रेलिया में थे। वहां तड़के करीब 3 बजे उनके फोन पर कुछ मिस्ड कॉल आए। इसके बाद एक मेसेज मिला, जिसमें अमिताभ बच्चन की विनम्रता देख वे हैरान रह गए। इस

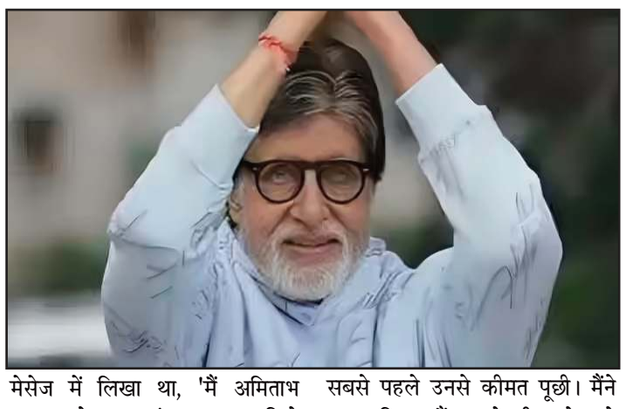

मेसेज में लिखा था, 'मैं अमिताभ बच्चन बोल रहा हूं, जब समय मिले तो कृपया मुझे कॉल करें।'

'सुनते ही मैं उठकर खड़ा हो गया तुरंत अमिताभ बच्चन को फोन किया'

उन्होंने कहा, 'यह सुनते ही मैं उठकर खड़ा हो गया तुरंत अमिताभ बच्चन को फोन किया।' 'हिंदुस्तान टाइम्स इंडिया नेक्स्ट रियल एस्टेट समिट 2026' में इस घटना को याद करते हुए लोढ़ा ने कहा कि उन्हें सबसे ज्यादा बिग बी की सादगी और विनम्रता ने इम्प्रेस किया।

बच्चन साहब ने सबसे पहले उनसे कीमत पूछी

लोढ़ा ने बताया कि अमिताभ बच्चन ने उनसे कहा, 'अभिनंदन जी, मैं यूपी से हूं और मुझे अयोध्या जी में जमीन लेनी है। मैंने उनसे कहा कि हम उनके लिए ये अरेंज कर देंगे।' उन्होंने आगे कहा, 'बच्चन साहब ने सबसे पहले उनसे कीमत पूछी। मैंने जवाब दिया- मैं आपसे कीमत के बारे में कैसे बात कर सकता हूं? उन्होंने कहा कि वे 15,000 सक्वॉयर फुट जमीन खरीदना चाहते हैं और मैंने उनसे कहा कि इतनी जमीन की कीमत करीब 15 करोड़ रुपये के आसपास होगी और अगले ही दिन उन्होंने मुझे 15 करोड़ रुपये भेज दिए।'

अभिनंदन जी, मैं यूपी से हूं और मुझे अयोध्या जी में जमीन लेनी है। बच्चन साहब ने सबसे पहले कीमत पूछी। मैंने जवाब दिया- मैं आपसे कीमत के बारे में कैसे बात कर सकता हूं? उन्होंने कहा कि वे 15,000 सक्वॉयर फुट जमीन खरीदना चाहते हैं और मैंने उनसे कहा कि इतनी जमीन की कीमत करीब 15 करोड़ रुपये के आसपास होगी और अगले ही दिन उन्होंने मुझे 15 करोड़ रुपये भेज दिए।

35 करोड़ रुपये में 2.67 एकड़ जमीन खरीदी

मार्च 2026 में अमिताभ बच्चन ने अयोध्या में अपनी प्रॉपर्टी में इजाफा किया और उन्होंने लक्ष्मअइछ से करीब 35 करोड़ रुपये में 2.67 एकड़ जमीन खरीदी थी। यह अयोध्या में उनका तीसरा और HoABL के साथ चौथा इन्वेस्टमेंट था। यह जमीन कंपनी के 75 एकड़ में फैले 'द सरयू' प्रोजेक्ट के पास स्थित है।

40 करोड़ रुपये में 25,000 स्क्वॉयर फुट का प्लॉट खरीदा था

बता दें कि इससे पहले मई 2025 में उन्होंने लगभग 40 करोड़ रुपये में 25,000 स्क्वॉयर फुट का प्लॉट खरीदा था। वहीं, 2024 में उन्होंने 'द सरयू' प्रोजेक्ट में 10,000 स्क्वॉयर फुट का प्लॉट करीब 14.5 करोड़ रुपये में खरीदा था।

कृति सैनन और कार्तिक आर्यन ने भी अपने पैसे लगाए हैं

अयोध्या के अलावा अमिताभ बच्चन लक्ष्मअइछ के 'सोल दे अलीबाग' प्रोजेक्ट में भी करीब 10 करोड़ रुपये का इन्वेस्टमेंट कर चुके हैं। यहां उन्होंने 10,000 वर्ग फुट जमीन खरीदी है। इसी प्रोजेक्ट में कृति सैनन और कार्तिक आर्यन ने भी अपने पैसे लगाए हैं और यहां निवेश किया है।

'जिनको अपने दान की सत्यता जाननी है, कभी भी अयोध्या आ सकता है', राम मंदिर ट्रस्ट की ओर से चढ़ावे को लेकर क्या दी गई जानकारी

(जीएनएस)।

राम मंदिर चंदा चोरी को लेकर ट्रस्ट ने सोमवार को बैठक की। बैठक करीब तीन घंटे तक चली। इसके बाद राम मंदिर ट्रस्ट ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की। ट्रस्ट ने हरेक बात की जानकारी दी।

(जीएनएस)।

अयोध्याः राम मंदिर ट्रस्ट की बैठक करीब तीन घंटे चली। इसके बाद ट्रस्ट ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिसमें ट्रस्ट ने हरेक सवाल का जवाब दिया। ट्रस्ट ने बताया कि चंपत राय और अनिल मिश्रा का इस्तीफा स्वीकार कर लिया गया है। अंतरिम महासचिव कृष्ण मोहन को बनाया गया है।

प्रेस कॉन्फ्रेंस खत्म होने के बाद राम मंदिर ट्रस्ट की ओर से प्रेस विज्ञप्ति जारी की गई, जिसमें बताया कि श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के न्यासियों की बैठक सोमवार को अयोध्या में संपन्न हुई। इसमें प्रमुख रूप से दानपात्रों से प्राप्त राशि की गणना की प्रक्रिया में

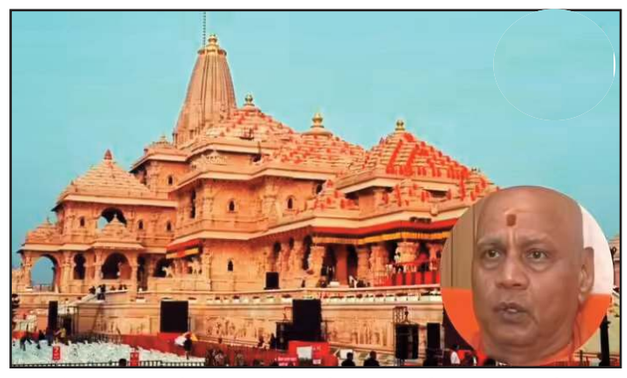

अनियमितता, उसकी जांच और कार्रवाई, महामंत्री और एक न्यासी के न्यासी पद से त्यागपत्रों, मीडिया में चल रही चचाओं, भावी अन्तरिम व्यवस्थाओं आदि विषयों पर विचार हुआ।

2020 में ट्रस्ट की स्थापना के बाद छह वर्ष से कम के अल्पकाल में प्रभु श्री रामलला के भावी और अप्रतिम मंदिर के निर्माण का ऐतिहासिक कार्य सम्पूर्ण हुआ। इसी अवधि में मुख्य मंदिर एवं परकोटे में बने समस्त मंदिरों में प्राण-प्रतिष्ठा, ध्वजारोहण और श्रीराम यंत्र की स्थापना के महती कार्य प्रभु कृपा से सानंद और शास्त्रीय विधि-विधान से संपन्न हुए। न्यास इस सांस्कृतिक धरोहर के निर्माण और अनेक धार्मिक उत्सवों में सहयोगी सम्पूर्ण हिन्दू समाज, श्रमिकों, अभियन्ताओं, शिल्पकारों, वास्तुविदों और केंद्रीय व राज्य सरकारों का हार्दिक आभार मानता है।

31 मार्च तक 582 करोड़ रुपये चढ़ावा मिला

ट्रस्ट ने कहा कि निधि समर्पण अभियान एवं कॉर्पस दान के माध्यम से प्राप्त कुल राशि 3264 करोड़ रुपये में से 2370 करोड़ रुपये निर्माण एवं पूंजीगत व्यय में उपयोग की गई है। प्रारम्भ से लेकर 31 मार्च, 2026 तक कुल चढ़ावा 582 करोड़ रुपये प्राप्त हुआ, जिसमें से 391 करोड़ रुपये की राशि संचालन व्यय में उपयोग ली गई। शेष राशियां बैंक खातों में उपलब्ध है। ये समस्त वितीय सूचनाएं समय-समय पर ट्रस्ट ने मीडिया के समक्ष प्रस्तुत की हैं।

ट्रस्ट के अनुरोध पर एसआईटी गठित हुई

चढ़ावे की राशि की गणना प्रक्रिया में अनियमितता से न्यासीगण आहत एवं चिंतित हैं और इस दुर्भाग्यकारी प्रकरण पर गंभीर खेद व्यक्त करते हैं। इस प्रकरण की जानकारी प्राप्त होने पर पाया है कि ट्रस्ट के अधिकारियों ने अनियमितता के संज्ञान में आने पर प्रारंभिक जानकारी एकत्र करने के बाद उत्तर-प्रदेश शासन से निष्पक्ष जांच का आग्रह किया। ट्रस्ट के अनुरोध पर शासन ने तत्काल उच्च स्तरीय जांच दल (एसआईटी) का गठन किया, ताकि पूरे मामले की निष्पक्ष, व्यापक और तथ्यपरक जांच हो सके। किसकी क्या भूमिका रही, किन लोगों की संलिप्तता है और किसके विरुद्ध मुकदमा दर्ज होना चाहिए-इन सभी प्रश्नों का उत्तर केवल जांच के आधार पर ही संभव था। इसी उद्देश्य से ऐसे जांच दल के गठन के अनुरोध की पहल की गई।

ट्रस्ट ने मुकदमा दर्ज कराया

एसआईटी की प्रारंभिक रिपोर्ट में 8 लोगों के नाम सामने आए। जिनके विरुद्ध प्रथम दृष्टया साक्ष्य मिले, उनके विरुद्ध ट्रस्ट ने मुकदमा दर्ज कराया और गिरफ्तारियां भी हुईं। अब पूरा मामला कानून के अनुसार आगे बढ़ रहा है। ट्रस्ट का स्पष्ट मत है कि जो भी दोषी हो, उसके विरुद्ध कानूनी कार्रवाई होकर कठोरतम दंड मिलना चाहिए। एसआईटी का कार्यक्षेत्र सिर्फ जांच तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह सुझाव देना भी है कि ट्रस्ट की व्यवस्थाओं में क्या आवश्यक सुधार करने चाहिए, जिससे व्यवस्था और अधिक सुदृढ़, मजबूत एवं पारदर्शी हो सके।

चंपत राय और अनिल मिश्र ने नैतिक आधार पर त्यागपत्र दिया

एसआईटी की प्रारंभिक रिपोर्ट आने के बाद महामंत्री चंपत राय और ट्रस्टी अनिल मिश्र ने नैतिक आधार पर त्यागपत्र दिया है, जिन्हें आज ट्रस्ट की बैठक में विचारार्थ प्रस्तुत किया गया। ट्रस्ट ने निष्पक्ष जांच के लिए नैतिक आधार पर दिए दोनों के त्यागपत्र को स्वीकार किया है। साथ ही ट्रस्ट ने गोपाल नगरकोटे (गोपाल राव) का नाम विशिष्ट आमंत्रित सदस्य सूची से हटाने का निर्णय किया है। ट्रस्ट का मानना है कि जांच की वैधानिक प्रक्रिया पूरी होने पर सत्य प्रकाशित होगा और तब तक किसी भी व्यक्ति पर दोषारोपण करना उचित नहीं है।

कुछ लोग लगातार भ्रम फैला रहे हैं

ट्रस्ट ने प्रबंधन एवं संचालन की पद्धति और प्रणाली की कमजोरियों को दूर करने और उन्हें सशक्त बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया है और एसआईटी से अपेक्षित अनुशंसाओं के अतिरिक्त विशेषज्ञों से भी स्वतंत्र परामर्श लेने का सुझाव दिया है, जिससे मंदिर प्रबंधन की एक आदर्श, कुशल और पारदर्शी व्यवस्था स्थापित हो सके, जो इस क्षेत्र में अनुकरणीय उदाहरण बने। कुछ लोग इस दुर्भाग्यपूर्ण प्रकरण को श्रीरामलला मंदिर, श्रीराम जन्मभूमि, हिंदू समाज और व्यापक हिंदू आस्था को कमजोर करने के अवसर के रूप में उपयोग करने का प्रयास कर रहे हैं। आधारहीन आरोप जनमानस के समक्ष प्रस्तुत किए जा रहे हैं, जिनका उद्देश्य सत्य सामने लाना नहीं, बल्कि निरंतर भ्रम फैलाना है।

तमाम विवादों और दुष्प्रचार के बावजूद श्रीराम जन्मभूमि मंदिर में दर्शनार्थ आने वाले श्रद्धालुओं की संख्या एवं श्रद्धा में कमी नहीं आई है। मंदिर में श्रद्धालुओं का आगमन पूर्ववत निरंतर जारी है। यह इस बात का प्रमाण है कि आधारहीन व भ्रामक आरोपों के बाद भी करोड़ों रामभक्तों की आस्था और विश्वास अडिग है।

श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट, अयोध्या

2926 भेंटें मिली हैं

नकद राशि के अतिरिक्त अनेक श्रद्धालुओं ने वस्तु के रूप में प्रभु श्री रामलला को भेंट अर्पित की हैं। ऐसी कुल 2926 भेंट प्राप्त हुई हैं, जो समस्त, तिथि अनुसार, सम्पूर्ण विवरण के साथ रजिस्टर में दर्ज हैं और उनका भौतिक सत्यापन एक स्वतंत्र चार्टर्ड अकाउंटेंट फर्म द्वारा आंतरिक अंकेक्षक के नाते प्रति वर्ष किया जाता है। काउंटर पर ऐसी भेंट देने वाले समस्त श्रद्धालुओं को रसीद दी गई हैं और काउंटर के अतिरिक्त दी गई भेंट के लिए भी उन समस्त श्रद्धालुओं को रसीद दी गई है, जिन्होंने दानदाता का विवरण दिया। समस्त श्रद्धालुओं से निवेदन है कि जो भी अपनी दी हुई भेंट का उपयोग जानना और सत्यापन करना चाहें, वे कभी भी ट्रस्ट के अधिकारी से तिथि व समय निश्चित कर अयोध्या पधारें और प्रभु श्री रामलला के दर्शन के साथ अपनी भेंट का सत्यापन कर सकते हैं।

चांदी को गलाकर छड़ें बना दी गईं

चांदी की वस्तुओं को भारत सरकार की टकसाल (मिंट) में गला कर छड़ें बनाई गई हैं, जिनके मूल स्वरूप का विवरण फोटो व वजन सहित उपलब्ध है। गलाने के पश्चात चांदी की शुद्धता और कुल वजन के टकसाल के प्रमाण-पत्र भी उपलब्ध हैं।

एसआईटी की सामने साक्ष्य पेश करें

ट्रस्ट का आग्रह है कि यदि किसी व्यक्ति, संस्था या पत्रकार के पास मंदिर से सम्बद्ध किसी भी व्यक्ति के विरुद्ध अनियमितता के ठोस साक्ष्य हैं, तो उन्हें सार्वजनिक आरोप लगाने के बजाय एसआईटी और संबंधित जांच एजेंसी को उपलब्ध कराया जाए। जांच एजेंसियां प्रमाणों के आधार पर अवश्य कार्रवाई करेंगी।

तीन सदस्यीय समिति गठित

न्यास की बैठक में नए महामंत्री की नियुक्ति होने तक ट्रस्टी कृष्ण मोहन को अंतरिम महामंत्री नियुक्त किया गया है।

100 दलित उम्मीदवारों के साथ अखिलेश यादव का 'अयोध्या मॉडल' फिर सफल होगा क्या?

(जीएनएस)।

लखनऊ,

अखिलेश यादव आने वाले उत्तर प्रदेश चुनाव में लोकसभा चुनाव के कारगर नुस्खे फिर आजमाने जा रहे हैं. लोकसभा चुनाव में ढऊअ के सफल प्रयोग के बाद आगामी विधानसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी उसे विस्तार देने की योजना पर काम कर रही है - और, बीजेपी से सीधे मुकाबले के लिए निशाना बीएसपी नेता मायावती के वोटर पर टिकी है.

2024 के लोकसभा चुनाव के बाद से ही यूपी के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव हर मौके पर ढऊअ (पिछड़े, दलित और अल्पसंख्यक) फैक्टर का जिक्र करते हुए उसकी अहमियत समझाते रहे हैं. अखिलेश यादव को बीएसपी या मायावती पर सीधा हमले से परहेज करते भी देखा जाता रहा है, लेकिन अब मिजाज बदल रहा है. रिपोर्ट के मुताबिक, अखिलेश यादव को लगता है कि दलित वोट बैंक के एक हिस्से को अगर बीएसपी की चुनावी रणनीति समझाने की कोशिश की जाए, तो वे समाजवादी पार्टी का साथ दे सकते हैं - और, अगर ऐसा संभव हुआ तो बीजेपी से मुकाबला थोड़ा आसान हो सकता है.

समाजवादी पार्टी आगामी यूपी विधानसभा चुनाव में भी पिछले लोकसभा चुनाव की ही तरह सामान्य सीटों पर दलित उम्मीदवार उतारने का प्लान कर रही है. लोकसभा चुनाव के बाद अखिलेश यादव अयोध्या (फैजाबाद लोकसभा सीट) के सांसद अवधेश प्रसाद को आगे करके बीजेपी को टार्गेट करते रहे हैं, लगता है आने वाले चुनाव में भी वैसा ही नजारा देखने को मिलने वाला है - सवाल है कि यूपी चुनाव में 100 सीटों पर दलित उम्मीदवार उतारकर समाजवादी पार्टी मायावती के वोटर को क्या संदेश देने की कोशिश कर रही है?

समाजवादी पार्टी का PDA विस्तार अभियान

अखिलेश यादव लगता है अपनी छवि बदलने की कोशिश में लग गए हैं. समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह को लोक पिछड़ों के नेता मानते थे, लेकिन अखिलेश यादव की यादव समुदाय के नेता की छवि बनने लगी थी. बीजेपी विरोध के नाम पर समाजवादी पार्टी को मुस्लिम समुदाय के भी वोट मिल जाते हैं. आने वाले यूपी चुनाव के लिए समाजवादी पार्टी की जो रणनीति सामने आ रही है, मालूम होता है कि दलित वोट बैंक में ढंग से सेंध लगाने की कोशिश है.

ध्यान देने वाली बात यह है कि समाजवादी पार्टी दलित वोटों को ऐसे समय साधने की कोशिश कर रही है, जब मायावती बीएसपी के लिए फिर से दलित और ब्राह्मण वोटों की सोशल इंजीनियरिंग पर काम कर रही हैं. समाजवादी पार्टी और उसकी गठबंधन साथी कांग्रेस एक साथ आरोप लगाते हैं कि बीएसपी की चुनावी रणनीति बीजेपी की मदद के लिए होती है.

लेटेस्ट रिपोर्ट के अनुसार, समाजवादी पार्टी आने वाले यूपी चुनाव में 100 दलित उम्मीदवार उतारने जा रही है. उत्तर प्रदेश में अनुसूचित जाति के लिए 84 और अनुसूचित जनजाति के लिए 2 सीटें आरक्षित हैं. सुरक्षित सीटों पर तो हर पार्टी के दलित उम्मीदवार ही चुनाव लड़ते हैं, समाजवादी पार्टी 14 अनारक्षित सीटों पर भी दलित नेताओं को टिकट देने की योजना पर काम कर रही है.

उत्तर प्रदेश की 403 में से 100 सीटों पर दलित नेताओं को टिकट देने की रणनीति असल में अखिलेश यादव के पीडीए का विस्तार कार्यक्रम है - अब सवाल है कि समाजवादी पार्टी के दलित प्रोजेक्ट का मकसद क्या है?

समाजवादी पार्टी के अंदरूनी सूत्रों के हवाले से इंडियन एक्सप्रेस की एक रिपोर्ट में इस सवाल का जवाब है, दलित समुदाय को संदेश भेजने के अलावा इसका मकसद एक व्यापक नैरेटिव तैयार करना भी है, और यह कि समाजवादी पार्टी अब अपनी यादव-मुस्लिम पार्टी वाली छवि से उबर रही है. समाजवादी पार्टी के एक सीनियर नेता का कहना है, यह कदम उठाए जाने का मकसद यह नैरेटिव गढ़ना है कि समाजवादी पार्टी दलितों को आरक्षित सीटों से भी ज्यादा हिस्सेदारी देने को तैयार है... हमने 2024 के लोकसभा चुनाव में भी यही किया था और हमें इसका फायदा मिला था.

देखा जाए, तो लोकसभा चुनाव में अखिलेश यादव का ढऊअ एक्सपेरिमेंट सफल रहा. 2024 लोकसभा चुनाव में समाजवादी पार्टी ने सामान्य सीट से दो दलित उम्मीदवारों को टिकट दिया था, मेरठ और फैजाबाद. फैजाबाद लोकसभा सीट तो अवधेश प्रसाद ने जीतकर समाजवादी पार्टी को थमा दिया, लेकिन मेरठ में सुनीता वर्मा रामायण में श्रीराम का किरदार निभाने वाले बीजेपी उम्मीदवार अरुण गोविल से महज 10,585 वोटों से हार गईं.

अब सवाल है कि समाजवादी पार्टी कौन कौन सी सामान्य सीटों पर अपने दलित उम्मीदवारों को आजमाने जा रही है?

समाजवादी पार्टी के ही एक नेता ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया है, हम दलित समुदाय के उन उम्मीदवारों को चुनने जा रहे हैं जो सामान्य सीटों पर लड़ सकें... हमारा लक्ष्य इस बार दलितों को 100 सीटें देना है, लेकिन यह मजबूत और उपयुक्त उम्मीदवार मिलने पर ही निर्भर करेगा... जिन सामान्य सीटों पर हम दलित उम्मीदवार उतारने की तैयारी कर रहे हैं, वे मुख्य रूप से ऐसी सीटें हैं जहां समाजवादी पार्टी पहले से बहुत मजबूत स्थिति में नहीं है.

क्या मायावती के प्रति अखिलेश यादव का रुख बदलने वाला है?

ढऊअ में दलित विस्तार योजना का कोई नकारात्मक असर न पड़े, इसका भी इंतजाम पहले से ही किया जा रहा है. एक मुस्लिम समाज से आने वाले समाजवादी पार्टी के एक नेता ने इंडियन एक्सप्रेस को बताया, 'अखिलेश जी ने यादव और मुस्लिम नेताओं को साफ तौर पर बताया है कि इस बार समाजवादी पार्टी 2024 वाला फॉर्मूला ही अपनाएगी, और दोनों समुदायों को ज्यादा टिकट नहीं दिए जाएंगे... सरकार बनने के बाद ऐसे नेताओं को विधान परिषद के जरिए जगह दी जाएगी.'

और इसके साथ ही अखिलेश यादव धीरे धीरे आक्रामक होने लगे हैं. बीते चुनावों में अखिलेश यादव को बीएसपी वोटर और मायावती के प्रति काफी नरम देखा जा चुका है. संभव है आने वाले चुनाव में ये सब न देखने को मिले. हाल के ही एक सार्वजनिक कार्यक्रम में अखिलेश यादव ने दलित समुदाय से वोट मांगते वक्त अपनी तरफ से हकीकत समझाने की भी कोशिश की. बोले, बीएसपी चाहे बीजेपी के साथ खुलकर हो या छिपकर, बीएसपी को वोट देना अपना वोट गंवाना है.

बीएसपी पर अखिलेश यादव का यह बदला स्टैंड तो यही बता रहा है कि अखिलेश यादव आने वाले चुनाव में दलित वोट हासिल करने के लिए आक्रामक रुख अख्तियार करने वाले हैं. समाजवादी पार्टी के दलित फेस राज्यसभा सांसद रामजी लाल सुमन के मुताबिक, समाजवादी पार्टी को दलित वोटों का बड़ा हिस्सा हासिल करने का पक्का यकीन है. कहते हैं, मैं बीएसपी की आलोचना नहीं करना चाहता, लेकिन उत्तर प्रदेश के लोग समझ चुके हैं कि बीएसपी आखिरकार बीजेपी की मदद करने वाली है. मौजूदा राजनीतिक माहौल में कोई भी राजनीतिक पार्टी हाथ पर हाथ रखे वोट पाने की उम्मीद नहीं कर सकती, जैसा बीएसपी कर रही है... हमें दलित समुदाय से बीजेपी विरोधी वोट मिलेंगे... दलितों को यह एहसास हो गया है कि बीजेपी और आरएसएस की मूल मानसिकता दलित विरोधी है, जो उनके मनुवादी एजेंडे में झलकती है.

उत्तर प्रदेश में 21 फीसदी दलित आबादी है, और वही मायावती की राजनीति का मजबूत आधार है. दलितों के साथ ब्राह्मण वोटर को जोड़कर मायावती 2007 में अकेले दम पर बीएसपी की सरकार बना चुकी हैं, और एक बार फिर सोशल इंजीनियरिंग का वही फॉर्मूला अपनाने की तैयारी कर रही हैं. लेकिन, हालात अच्छे नहीं रह गए हैं. 2022 के यूपी विधानसभा चुनाव में बीएसपी सिर्फ एक सीट ही जीत पाई थी. और, 2017 में 22.23 फीसदी रहा उसका वोट शेयर गिर कर 12.88 फीसदी पहुंच गया था. 2024 के आम चुनाव में तो बीएसपी का वोट शेयर लुढ़क कर 9.4 फीसदी ही रह गया, जबकि 2019 में बीएसपी का वोट शेयर 19.43 फीसदी दर्ज किया गया था - लगता है, अखिलेश यादव समाजवादी पार्टी को मायावती की